thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 05 अप्रैल 2015

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 05 अप्रैल 2015 से 11 अप्रैल 2015

बै. कु. 01 ● वि० सं०–2072 ● वर्ष 79, अंक 151, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,116 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## डी.ए.वी. पटियाला में '51 कुण्डीय यज्ञ' करके मनाया दयानन्द व आनन्द उत्सव'

आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल भूपिन्द्रा रोड़, पटियाला में दयानन्द व आनन्द उत्सव मनाया गया। इस पावन अवसर पर 51 कुण्डीय यज्ञ किया गया; जिसमें श्री पूनम सूरी जी (प्रधान,डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ) व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती मणि सूरी मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे तथा दसवीं और बारहवी कक्षा के लगभग 500 विद्यार्थियों ने यजमान की भूमिका निभाई। वैदिक रीति से सम्पन्न हुए इस महायज्ञ ने सभी को आत्म–विभोर कर दिया। माननीय श्री पूनम सूरी जी प्रत्येक हवन कुण्ड पर बैठे विद्यार्थियों व शिक्षकों को पुष्प वर्षा द्वारा अपना शुभ आशीर्वाद मंगलकामनाएँ दीं।

इस अवसर को चिर स्मरणीय बनाने के लिए मुख्य अतिथि ने 'महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती प्रतिभा–विकास – केन्द्र' का लोकार्पण किया। माननीय श्री पूनम सूरी जी ने नवीन 'महात्मा हंसराज प्रशासकीय विभाग' का उद्घाटन किया।

आनन्द उत्सव' स्थानीय हरपाल टिवाना सेन्टर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स' के भव्य सभागार में एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया; जिसमें डी.ए.वी. का शिक्षा दर्शन, भारतीय व राष्ट्रीयता के विभिन्न मोहक रंग प्रस्तुत किये। मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में कहा, ''बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना होगा। बच्चों में भौतिक व आध्यात्मिक गुणों के संतुलन के साथ नैतिक मूल्यों का विकास करना होगा जो अभिभावकों व शिक्षकों के साँझे प्रयासों से ही सम्भव है।'' उन्होंने स्कूल के नये न्यूज़ लैटर का लोकार्पण भी किया तथा स्कूल में 125 मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया।

प्राचार्य प्रभाकर ने स्कूल की शैक्षणिक व अन्य वार्षिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री एच.आर.गन्धार (सलाहकार, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली), प्रिं. विजय कुमार शर्मा (क्षेत्रीय निर्देशिका, पटियाला व फिरोजपुर जोन), आस–पास की डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्य काफी संख्या में उपस्थित थे।

शान्तिपाठ के साथ समारोह समापन हुआ।

## डी.ए.वी. शिक्षण महाविद्यालय अबोहर में हुई वैदिक गोष्ठी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से डी.ए.वी. शिक्षा शिक्षा महाविद्यालय, अबोहर में स्थापित स्वामी दयानन्द स्टडी सर्कल की ओर से स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को क्रियान्वित रूप देने के लिए एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के वक्ता प्रो. के.के.शर्मा, प्रो. सुरेन्द्र कुमार, प्रो. एस.एम. मिश्रा, डॉ. सी.डी.एस. कौशल, श्री रवि भटनागर थे। गोष्ठी के शुभारम्भ में कालेज की प्राचार्या डॉ. (श्रीमतर) विनीता सिंह जी ने आए हुए वक्ताओं का स्वागत किया तथा

इस सेमीनार के मुख्य उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में प्रो. सुरेन्द्र कुमार ने अपने भाषण में आधुनिक समय में दयानन्द जी की विचारधारा को तार्किक तथा वैज्ञानिक तथ्यों के साथ पेश किया। तत्पश्चात प्रो. के. के. शर्मा ने भारतीय समाज में स्वामी दयानन्द जी द्वारा किए समाज सुधारों के बारे में अवगत करवाया। डॉ. सी. डी.एस. कौशल ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सम्पूर्ण जीवन की जानकारी प्रस्तुत की। प्रो. एस.एम. मिश्रा जी ने आर्य समाज में स्वामी दयानन्द सरस्वती के योगदान तथा उनके दृष्टिकोण पर पैनी नजर डाली। श्री रवि भटनागर ने स्वामी दयानन्द जी के शैक्षणिक दृष्टिकोण तथा विज्ञान और आध्यात्मिकता के साथ जोड़ा। इसके बाद विभिन्न कॉलेजों में आए प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने स्वामी दयानन्द जी के विचारों को लेकर शोध पत्र प्रस्तुत किये। कॉलेज की प्राचार्या ने आए हुए अतिथियों का धन्यवाद किया। गोष्ठी में समाज के गणमान्य लोग भी मौजूद थे।

## हरि ओ३म् शास्त्री (पी एच.डी.) से समानित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–14 फरीदाबाद के संस्कृत शिक्षक तथा उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के स्नातक हरि ओ३म् शास्त्री को भारत के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ भागल पुर ने उनकी उत्कृष्ट साहित्य सेवाओं के लिए उन्हें विद्यावास्पति (Phd) की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। यह कार्यक्रम भारत के प्रसिद्ध तीर्थस्थल महाकाल की नगरी उज्जैन में सम्पन्न हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

thearyasamaj.org



ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 05 अप्रैल, 2015 से 11 अप्रैल, 2015

# देवों के मार्ग पर चलें

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**आ देवानामपि पन्थामगन्म, यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्।**
**आग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता, सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति।।**

अथर्व 19.59.3

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अपि)** क्या **(देवानां)** देवों के **(पन्थां)** मार्ग पर **(आ–अगन्म)** [हम] चलें? [हाँ], **(यत्)** यदि **(तत् अनुप्रवोढुम्)** उस पर स्वयं को चलने में **(शक्नवाम)** समर्थ हों। **(अग्निः)** आत्मा **(विद्वान्)** विद्वान है, **(सः)** वह **(यजात्)** यज्ञ करे, **(सः)** वह **(इत्)** सचमुच **(होता)** होम–निष्पादक है। **(सः)** वही **(अध्वरान्)** यज्ञों को और **(सः)** वही **(ऋतून्)** ऋतुओं को **(कल्पयाति)** रचाये।

● आओ, हम देवों के मार्ग पर चलें। यज्ञ के तंतु से बंधे रहना ही देवों का मार्ग है। देखो, ये सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, ऋतु, संवत्सर आदि देव कैसे 'यज्ञ' के मार्ग पर चल रहे हैं। कभी उनके यज्ञ–पालन में व्यतिक्रम नहीं होता। शरीर में भी मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि देव कैसे संगठित हो देवयान का अवलम्बन कर शरीर–यज्ञ को चला रहे हैं। समाज में भी 'देव' पदवी को पाये हुए महापुरुष 'यज्ञ' के ही पथ पर चला रहे हैं। और, सबसे बड़ा देवों का देव परमात्मा भी निरन्तर देव–मार्ग पर चलता हुआ इस ब्रह्मांड–यज्ञ का सम्पादन कर रहा है। हम चाहते हैं कि हम भी इस देव–मार्ग के पथिक बनें। क्या तुम चाहते हो कि इस मार्ग पर चलना अति कठिन है, तलवार की धार पर चलने के समान है, अतः पहले शक्ति को तोल लो कि तुम इस पर स्थिर रह भी सकोगे या नहीं, उसके पश्चात् इस मार्ग पग बढ़ाना? सुनो, हमने अपने सामर्थ्य को भलीभांति परख लिया है। हमारा आत्मा 'अग्नि' है, अग्रणी है, तेज का पुंज है, ज्योतियों की ज्योति है। वह 'विद्वान्' है, देवों की राह पर चलना और चलाना जानता है। अतः हमें देव–प्रदर्शित यज्ञ–मार्ग से भटक जाने का कोई भय नहीं है। हम निश्चिंत होकर उसके हाथों में अपनी 'यज्ञ' की पतवार सौंप रहे हैं। वह 'होता' है, यज्ञ–निष्पादन में कुशल है, संस्कृत हवि का होम करने में निष्णात है। वह जानता है कि यज्ञ को 'अध्वर' अर्थात् हिंसा–रहित ही होना चाहिए। भद्रजनों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया यज्ञ यज्ञ नहीं है। हमारा आत्मा 'अध्वर' यज्ञों को रचाये और वही यह भी देखे कि किस यज्ञ के लिए कौन सी ऋतु, कौन सा समय उपयुक्त है, क्योंकि काल–अकाल का विचार किये बिना प्रारंभ किया गया या सफल नहीं होता। आओ, हम देव–पथ के पथिक बनें। ❑

**वेद मंजरी से**

**इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।**

# एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि सविता सूर्य को भी कहते हैं। शास्त्र कहता है सूर्य निकलने से पहले शैय्या त्यागकर, नहा–धोकर, उषा का स्वागत करना चाहिए। यह उषा चार वस्तुएँ लेकर आती है–बल देती है, बुद्धि देती है, धन देती है, और यश प्रदान करती है। जो जागते हैं, वे इन चारों को प्राप्त करते हैं।

सविता के पश्चात् गायत्री मंत्र में एक और शब्द है 'भर्गः'। यह शब्द अनन्द संतोष देने वाला है। भर्गः का अर्थ है–ज्योति देने वाला। इसके साथ ही 'देवस्य' शब्द है। इसका अर्थ है–देने वाला, आनन्द देने वाला, वह प्रत्येक वस्तु देने वाला जिसकी व्यक्ति इच्छा कर सकता है। इस देवस्य के साथ एक और शब्द है 'वरेनियम'। इस शब्द को बोलते ही होंट बंद हो जाते हैं। बाहर का संसार बाहर रह जाता है, अंदर का संसार जाग उठता है। इसी को योगदर्शन में 'ईश्वर प्रणिधान' कहा है। इसी को नारद ने 'अनन्य भक्ति' कहा है। इसी को महर्षि दयानन्द ने 'उपासना' का नाम दिया है, और गीता में 'शरणागति' कहा है। भक्ति के विषय में कहा–पाप न रहे तो चिंता नहीं रहती। चिंता रहे तो, इसका अर्थ है कि भक्ति हुई नहीं।

अब आगे...

परमहंस श्री रामकृष्ण जी महाराज जीवन के अंतिम दिनों में रुग्ण–से हो गये। गले के अन्दर कैंसर हो गया उन्हें। डॉक्टरों ने चिकित्सा की, वे स्वस्थ नहीं हुए। रुग्णता बढ़ती गई। कलकत्ता के प्रसिद्ध विद्वान् दुःखी होकर उनके पास आये; बोले, "डॉक्टर हार गए, योगिराज! अब केवल एक उपाय रह गया है। आप तीन बार कह दीजिये, 'बीमारी दूर हो जाये' तो बीमारी चली जायेगी। तीन बार माँ से प्रार्थना कर दीजिये, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।" श्री रामकृष्ण उस समय ठीक प्रकार से बोल नहीं सकते थे। कष्ट से बोले, "शशिधर! माँ से क्या मैं ऐसी बात कहूँ? क्या माँ को स्वयं पता नहीं कि मेरे लिए अच्छा क्या है और बुरा क्या है? जो वह उचित समझती हैं वही करती हैं। मैंने उनसे कभी कुछ माँगा नहीं, मैं उनसे कुछ माँगूँगा नहीं।"

यह है सच्चे भक्त की पहचान! वह व्यापार नहीं करता, 'वरेण्यम्' कहकर अपने–आपको ईश्वर के अर्पण कर देता है।

और जब इस प्रकार वह अपना सब–कुछ ईश्वर पर छोड़ देता है, जब उसे 'सविता, भर्गः, देव और वर' रूप में अपना लेता है तो उसके अंतःकरण के अंदर एक महान् ज्योति जाग उठती है।

जो लोग ईश्वर–भक्ति करना चाहते हैं, उनसे मेरी प्रार्थना है कि 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' के उपासना काण्ड को ध्यानपूर्वक पढ़ें, उसमें उन्हें सब–कुछ मिलेगा। कई बार मैं आश्चर्य के साथ सोचता हूँ कि सब–कुछ तो हमारे पास है, फिर हम भटकते क्यों फिरते हैं? फिर भी भूख–भूख क्यों चिल्लाते हैं? याद रखो–

**भीखा भूखा कोई नहीं,**
**सबकी गठड़ी लाल।**
**गाँठ खोल नहीं देखते,**
**ता विधि भये कंगाल।।**

अरे घबराओ नहीं! चिन्ताओं की जिस गठरी को उठाये फिरते हो, उसे उतार फेंकने का उपाय विद्यमान है – पहले मन की एक गठरी को खोलो; आँखों पर आये पर्दे को दूर कर दो; जो तुम्हारे पास है उसे देखो। 'ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका' में महर्षि कहते हैं–

"योग करनेवाले मनुष्य तत्त्व अर्थात् ब्रह्म–ज्ञान के लिए जब अपने मन को पहले परमेश्वर से युक्त करते हैं, तब परमेश्वर उनकी बुद्धि को अपनी कृपा से युक्त कर देता है, फिर वे मनुष्य परमेश्वर के प्रकाश को निश्चय करके यथार्थ धारण करते हैं, पृथिवी के बीच एक योगी का यही प्रसिद्ध लक्षण है।"

इस प्रकार एक अद्भुत प्रकाश अन्तःकरण में जाग उठता है। जैसे ही

thearyasamaj.org



भक्त 'धीमहि' कहता है, वैसे ही, यदि उसका ध्यान ठीक है, यदि उसने 'सविता' और 'भर्गः' के अर्थों को समझा है तो एक चमकता हुआ, करोड़ों सूर्यों को प्रकाश देनेवाला एक महान् सूर्य उसके अन्दर जाग उठता है।

प्रारम्भ में यह ज्योति दिखाई नहीं देती; यह तो अभ्यास की वस्तु है। गायत्री मन्त्र का देवता सविता है। इसीलिए जाप करते समय सूर्य-जैसे प्रकाश का ध्यान करना चाहिए। बारम्बार ध्यान करने से, बारम्बार अभ्यास करने से अन्तःकरण का दोष दूर होता है। यह दोष तीन प्रकार का है : एक मल है, दूसरा विक्षेप, तीसरा आवरण। मल निष्काम सेवा से दूर होता है, विक्षेप भक्ति से, आवरण ज्ञान से। तीनों जब दूर हो जायें, तब अन्तःकरण शुद्ध और पवित्र होता है, तब एक चमकता हुआ श्वेत प्रकाश उसके अन्दर जाग उठता है। जागते ही वह पूछता है, "माँग, क्या माँगता है?" उस समय मोटर-गाड़ियाँ, पशु, रिश्तेदार, बेटे, धन और धान्य नहीं माँगना – ये सब वस्तुएँ तो नष्ट होने वाली हैं, यहीं रह जाने वाली हैं। उस समय वह वस्तु माँगना जिससे यह लोक और परलोक दोनों सुधर जायें। उस समय कहना–

**धियो यो नः प्रचोदयात्।**
**ऐसी कृपा कर ऐ महाशक्ति!**
**ऐ महाज्योति! मेरी बुद्धि तेरी ओर चले।**

यह शरीर है न! अच्छी वस्तु है। परन्तु यह तो केवल एक मोटर है, उस महाराज के पास पहुँचने के लिए जिसके अतिरिक्त और कहीं भी सुख नहीं। हमारा लक्ष्य वह है, वहाँ पहुँचना है हमें। शरीर की इस मोटर में बैठकर पहुँचना है। परन्तु पहुँचना वहीं है – लक्ष्य वह है। आत्मा यात्री है, शरीर रथ है। और शेष सब-कुछ, यह धन-धान्य, पत्नी, मकान, बच्चे, मित्र, सम्बन्धी, देश, जाति और राष्ट्र केवल यात्रा की सामग्री हैं – रास्ता काटने का सामान। परन्तु यदि हम यात्री की सामग्री जुटाने में ही लगे रहें, रास्ता भूल जायें, लक्ष्य को भूल जायें तो फिर हमें बुद्धिमान कौन कहेगा?

एक था प्रधानमन्त्री। बहुत बड़े देश का प्रधानमन्त्री था वह। बहुत-कुछ उसके अधीन था। एक दिन वह एक नगर में पहुँचा। पता किया कि नगर का सबसे बड़ा चौधरी कौन है। नाम ज्ञात करके अपने ड्राइवर को बोला, "ड्राइवर! मेरी मोटर को ले जाओ, चौधरी साहब को ले आओ, कहना मैं उन्हें मिलना चाहता हूँ।" ड्राइवर गया, चौधरी साहब को आवाज दी। बोले, "क्या बात है?" ड्राइवर ने कहा, "आपको प्रधानमंत्री ने बुलाया है, आपके लिए मोटर भेजी है।" चौधरी साहब मोटर में बैठे; बोले, "प्रधानमंत्री के पास तो चलना ही है, तनिक हमें नगर का भ्रमण तो करा दो।" ड्राइवर ने बहुत अच्छी तरह भ्रमण करा दिया। चौधरी साहब बोले, "देखो, वह सामनेवाले सिनेमा-हाल में बहुत अच्छी पिक्चर लगी है। जाना तो है ही, तनिक ठहरकर चले जायेंगे। चलो, वह पिक्चर देख आयें।" तीन घण्टे बीत गए। सिनेमा-हाल से निकले तो बोले, "शहर मे एक सरकस आया है, चलो उसे भी देखें।" उसे भी देखा। रात हो गई अधिक; बोले, "अब तो मैं थक गया। कहीं निकट कोई अच्छी दुकान या होटल हो तो कोई ड्रिंक-विंक ले लें।" ड्राइवर ने कहा, "श्रीमान्, वह सामने होटल है, वहाँ पर बहुत अच्छी लाल रंग की शराब मिलती है।" चौधरी साहब वहाँ पहुँच गये, शराबपान करने के लिए।

देखो, मैं शराब को बुरी नहीं समझता। मेरी ओर से एक के स्थान पर दो बोतल पियो, परन्तु एक शर्त है, ऐसी शराब पियो जो फिर उतरे नहीं। ऐसी शराब क्या हुई, जो प्रातः पियो तो सांय नहीं, सायं पियो तो प्रातः नहीं। और सुनो! ऐसी शराब भी है जिसका नशा कभी उतरता नहीं। मैं उसी शराब का एजेण्ट हूँ, उसको बेचता हूँ। दूसरी शराब केवल गिरावट को जगाती है। ऐसी शराब को पीनेवाला चिल्लाकर कहता है–

**शराब पीकर उतरनेवाली पिलाई तो क्या पिलाई साकी!**
**जो चढ़के इक बार फिर न उतरे**
**वो मय पिलाये तो हम भी जानें।।**

पीनी है तो ऐसी शराब पियो जो एक बार पी लेने के पश्चात् फिर उतरे नहीं। मैं उसी शराब की बात करता हूँ जिसके सम्बन्ध में गुरु नानकदेव जी ने कहा था–

**भंग भसूड़ी सुरापान,**
**उतर जाये प्रभात।**
**नाम खुमारी नानका,**
**चढ़ी रहे दिन रात।।**

परन्तु जिन चौधरी साहब की बात मैं कह रहा हूँ, उन्हें तो इस नाम-खुमारी की आवश्यकता थी नहीं। वह तो इच्छुक थे लाल परी के। गए होटल में। प्याले के पश्चात् प्याले पीने लगे। बेहोश हो गये तो होटलवालों ने उठाकर बाहर नाली में फेंक दिया। प्रधानमन्त्री के ड्राइवर ने जब देखा कि चौधरी साहब तो उठने का नाम ही नहीं लेते तो अर्ध-रात्रि के समय खाली मोटर लेकर प्रधानमंत्री के पास पहुँच गया। प्रधानमंत्री ने पूछा, "अरे, तुझे तो चौधरी को लाने के लिए भेजा था, वह कहाँ है?" ड्राइवर ने सारी कहानी सुनाते हुए कहा, "श्रीमन्! वह तो औंधे मुँह नाली में पड़ा है। अपने-आप का भी होश नहीं उसे, आप उससे बात क्या करेंगे!" प्रधानमंत्री ने क्रोध से कहा, "मरने दो पापी को, कल उसे मोटर नहीं भेजी जायेगी।"

अरे ओ मानव! यह मोटर तो भगवान ने भेजी थी इसलिये कि तू उसके पास पहुँच सके। तू इसको कहाँ- कहाँ लिये घूमता है? कहाँ अपना समय नष्ट कर रहा है? अरे जाग, नहीं तो तेरा राजा रूठ जायेगा। मोटर चली जायेगी वापस और तू गन्दी नालियों में लुढ़कता फिरेगा। जाग, अभी समय है।

संसारवाले कहते हैं, हम दुःखी हो गये। लोग दोष देते हैं ईश्वर को, कहते हैं, "क्या ईश्वर है वह, कभी ओले भेज देता है, कभी भूकम्प, कभी अकाल, कभी बाढ़।" अरे, ईश्वर नहीं भेजता इनको, तुम्हारे कर्म भेजते हैं। उपनिषद् में कहा है–

**कृतं लोकं पुरुषोऽभिजायते।**

'अपने अन्तःकरण में जैसी दुनिया मैं बनाता हूँ, वैसी वह मुझको मिलती है।' हमारे कर्मों का फल है, जो हमारे सामने आता है; कोई दूसरा इसके लिए उत्तरदायी नहीं। कर्म के मार्ग पर ले-जानेवाली है बुद्धि। इसलिए अन्तःकरण में जब वह महान् ज्योति जाग उठे, वह प्रचण्ड सूर्य चमक उठे, तब प्यार से, श्रद्धा से, विश्वास से कहो–

**धियो यो नः प्रचोदयात्।**

'मुझे वह बुद्धि दे जो तेरी ओर ले जाए, तेरी ओर चले, सदा तेरी ही ओर।'

यह है गायत्री मंत्र। इसमें स्तुति, उपासना और प्रार्थना तीनों विद्यमान हैं। इसमें वह बात है जो मनुष्य को उसके लक्ष्य की याद दिलाती है।

सामवेद के 51वें मंत्र में इस लक्ष्य की चर्चा आती है। उसमें लिखा है–

"सुनो ऐ धरती पर रहने वाले लोगो! इसी माता-रूपी पृथिवी पर रहने के पश्चात् हम यहाँ से लौट जाते हैं और मोक्षधाम के सुख में ठहर जाते हैं। हमें यहाँ प्रभु का उपासक बनना है, प्रकृति का नहीं। अपने को अग्नि-आगे पहुँचाने वाला-बना। यह संसार खेल का मैदान है।"

इसका अर्थ क्या है? यह कि हम इस पृथिवी के रहने वाले नहीं, थोड़ी देर के लिए यहाँ आये, थोड़ी देर के लिए, फिर जाना अवश्य है। हमारा वास्तविक घर वहाँ है, उस परमधाम, मोक्षधाम, ब्रह्मलोक में। यात्री बनकर हम घर से निकल पड़े हैं। वापस घर को जाना है। यात्रा ठीक प्रकार से हो, जल्दी-से-जल्दी अपने घर में वापस पहुँच जायें, यही हमें करना है।

**शेष अगले अंक में....**

# माता पुन्ना देवी डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल

माता पुन्ना देवी डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल में स्वच्छता सप्ताह पूर्ण उत्साह का उल्लास के साथ मनाया गया। यह कार्यक्रम राजकीय निर्देशानुसार सात दिन तक चला। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के शिक्षकों व बच्चों द्वारा अनेक प्रकार की गतिविधियाँ की गईं जिसमें बस स्टेण्ड की सफाई, विद्यालय के सभी मैदान तथा पानी की टंकी की सफाई, विद्यालय की सभी कक्षाओं की सफाई इत्यादि शामिल थे। सभी बच्चों व शिक्षकों ने सात दिनों के इस कार्यक्रम में सुचारु रूप से भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में आदरणीय प्रधानाचार्या श्रीमती संगीता कक्कड़ जी के द्वारा श्रेष्ठ प्रतिभा सम्पन्न बच्चों को प्रोत्साहित किया गया।

thearyasamaj.org



# अंग्रेज़ों के पंच मकारों का प्रतिकार किया–आर्य समाज ने

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

अंग्रेजों का भारत आगमन तथा दीर्घकाल तक अपना शासन तंत्र स्थिर रखना, भारतवासियों के लिए जिन अभिशापों को लेकर आया उन्हें इस प्रकार उल्लिखित करना चाहिए– प्रथम – **"मर्चेण्ट"** – ये लोग व्यापारी बनकर भारत आये और मुगल बादशाह से अनुनय–विनय कर सर्वप्रथम सूरत (गुजरात) में अपनी कोठी कायम की। यह वाणिज्य के बहाने देश के आर्थिक शोषण का प्रारम्भ था। दूसरा– **"मिलिटरी"** बनाई और उसके बल पर मुगल, सिख, राजपूत तथा मराठा शक्तियों को नष्ट किया। इसके बाद आये – **"मिशनरी"** (ईसाई प्रचारक)। उन्होंने छल, बल, कपट से भारतवासियों का ईसाई बनाया। अब देखते–देखते डब्ल्यू.सी. बनर्जी (कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष), माइकेल मधुसूदनदत्त, रामचन्द्र बसु, कवयित्री तरूदत्त, संस्कृत विद्वान् श्री नीलकण्ठ शास्त्री, महाराजा रणजीतसिंह का पुत्र राजकुमार दिलीप सिंह ये सब ईसाई बन गये। अब शिक्षा को आमूल–चूल बदलने और उसे पाश्चात्य प्रभावित करने का काम किया – **"मैकाले"** ने, जिसने अपने पत्र में लिखा कि इस शिक्षा नीति के द्वारा ऐसी पद्धति बनायी जाये जो भारतीयों को काले साहब बना दे। वे रूप, रंग, आकार, प्रकार में चाहे भारतीय रहें किन्तु विचारों, चिन्तन तथा आचरण में पूरे अंग्रेज बन जाएं। इधर **"मैक्समलूर"**, मोनियर विलियम्स, क्रिमिथ आदि पाश्चात्य संस्कृतज्ञों की नीति रही कि वे अपने अध्ययन के बल पर शास्त्र ग्रन्थों की ऐसी व्याख्या करें जिससे भारतीय वैदिक धर्म को गलत रूप में पेश किया जा सके। अंग्रेजों के पंच मकार यही थे जिनका प्रतिकार करना अत्यावश्यक था।

यों तो आर्य समाज 10 अप्रैल, 1875 को मुम्बई में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित एक धार्मिक सामाजिक आन्दोलन था, किन्तु इस संस्था ने राजनैतिक स्वतंत्रता का कामना करने के साथ देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने तथा जीवन में स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को महत्व दिया। यह **"एम–मर्चेण्ट"** उत्तर था। पंजाब के आर्य समाजियों ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का आहवान तब किया जब गांधीजी की अपनी वकालत दक्षिण अफ्रीका में कर रहे थे। जहाँ तक **"मिलिटरी"** का सम्बन्ध है, स्वामी जी ने स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया तथा माता–पिता के समान सुखदायक होने पर भी विदेशियों के राज्य को कभी वरीयता नहीं दी। उन्होंने विदेशी सत्ता का मुकाबला करने के लिए अहिंसा को श्रेष्ठ बताया। इसी का परिणाम था कि जब गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह संग्राम हुआ तो लाखों आर्य समाजियों ने सत्याग्रही बनकर उसमें भाग ही नहीं लिया, अपितु क्रान्तिकारियों की वह जमात भी उभरी जो आर्य समाज से प्रभावित थी– सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, शाहपुरा के केसरीसिंह बारहठ तथा उनके पुत्र जोरावर सिंह, फांसी खाने वालों की दूसरी पंक्ति, जिसमें मास्टर गेंदालाल तथा ठाकुर रोशनसिंह उभरे, आर्य समाज के भक्त थे।

जहाँ तक विदेशी मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों का सम्बन्ध है, आर्य समाज ने अपनी सेवा प्रवृत्तियों तथा शास्त्रार्थ आदि अन्य बौद्धिक कार्यक्रमों के द्वारा इस विदेशी आक्रमण का जमकर प्रतिकार किया। इसी का परिणाम हुआ कि लाखों पिछड़े आदिवासीयों विदेशियों के चंगुल में फंसने से मुक्त हो सके। जब अंग्रेजी शासन ने भारत के लिए नई शिक्षा नीति बनाने के लिए लार्ड क्लाइव आदि को नियुक्त किया तो आर्य समाज ने उसके समानान्तर राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं को स्थापित किया जिनमें लाहौर का डी.ए.वी. कॉलेज तथा गुरुकुल कांगड़ी मुख्य है। इस शिक्षा पद्धति में छात्रों को परिवार से सुदूर गुरुकुल में अध्ययन करने का नियम था। इन शिक्षण संस्थाओं में राष्ट्रीय भावों को महत्व दिया गया तथा हिन्दी को माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया। ज्ञानोपार्जन के साथ–साथ चरित्र निर्माण पर जोर दिया जाता था।

प्रो. मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, मैकडॉनल आदि पाश्चात्य संस्कृत विद्वानों ने भारतीय भाषाओं का अध्ययन तो किया था किन्तु इन्होंने वेदादि शास्त्रों की गणना की और यह स्थापित किया कि वेदमंत्र बहुदेवोपासना का प्रतिपादन करते हैं तथा उसमें जड़ पूजा पर बल दिया जाता है। आर्य समान ने शास्त्रों की वास्तविक व्याख्या की और प्राचीन शास्त्रों की वैज्ञानिक समझ पैदा की।

इस प्रकार 140 वर्ष पूर्व आर्य समाज की स्थापना कर नवजागरण का शंखनाद किया गया। फलतः देश में राष्ट्रीयता को बल मिला। आर्य समाज का विस्तार भारत से भिन्न देशों में भी हुआ और दक्षिण अफ्रीका, फिजी, मॉरीशस आदि देशों में आर्य समाजें स्थापित हुईं। वस्तुतः आर्य समाज भारत तक सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन बना। आज इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा अफ्रीका महाद्वीप के अनेक नगरों में स्थापित आर्य समाजों ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और चिन्तन दर्शन का प्रचार किया है तथा इसके अनुयायी भारत के आदर्शों को विश्वव्यापी बना रहे हैं।

**श्री गंगानगर, राजस्थान**

# महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती एक योगी थे

● हरिश्चन्द्र आर्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक महान योगी थे। उन्होंने 21 वर्ष की आयु में योग सीखने के लिए घर छोड़ा था। उन्होंने योगानन्द से योग सीखा और आगे के पाठ ज्वालानंद गिरी एवं शिवानन्द गिरी से सीखे वे आबू पर्वत पर उच्च कोटि के योगी से मिले और उनसे योग के रहस्य सीखे।

हरिद्वार के निकट चण्डी पर्वत के जंगलों में योग करते रहे और ऋषिकेश में पवित्र योगियों एवं सन्यासियों के सानिध्य में योग सीखते एवं साधना करते रहे। बद्री नारायण के रास्ते में जोशीमठ में वे बहुत से योगियों से मिले और योग विद्या के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीखा।

**अठारह घंटे की समाधि लगाने में सक्षम थे।**

**भविष्य में होने वाली घटनाओं को देख लेते थे।।**

उनके जीवन की कितनी घटनाएं बताती हैं कि वे योगी थे–

1. जून 1866 में अजमेर में प्रार्थना समाज के बाबू श्यामलाल सिंह के घर से कुछ दूध लाया गया। स्वामी जी ने इसे ग्रहण करने से मना कर दिया और कहा यह दूध अनिच्छा से भेजा गया है। अतः मैं उनके परिवार में अनबन नहीं कराना चाहता। श्यामलाल सिंह ने जब इसे पहली बार सुना तो उन्हें आश्चर्य हुआ। परन्तु बाद में पता चला कि उनकी माँ ने साधु के लिए दूध भेजने पर आपत्ति की थी।

2. एक दिन स्वामी जी ने अपने रसोइये से कहा कि तेरे पिता जी तुझे लेने आ रहे हैं। राजनाथ बाहर गया परन्तु वहां न तो उसके पिताजी थे न कोई और। आधे घंटे बाद राजनाथ के पिता जी आ गये और उससे घर चलने को कहा।

3. एक दिन 1872 ई. में जब स्वामी जी कुछ लोगों के साथ बैठे थे, तो अचानक रुक कर बोले कोई विशेष घटना होने वाली है। थोड़े समय बाद एक व्यक्ति भोजन लाया और स्वामी जी से खाने को कहा, स्वामी जी ने वहां बैठे सभी लोग से कहा कि यह भोजन विषैला है। स्वामी जी ने उस व्यक्ति से फिर कभी ऐसी हरकत न करने को कहा।

4. बुलन्दशहर में कोई नन्द किशोर स्वामी जी के लिए कुछ सब्जी लाये। स्वामी जी ने उसे लेने से मना कर दिया क्योंकि वह चोरी की थी। वह वास्तव में मालिक की बिना आज्ञा के रास्ते से तोड़कर लाये थे।

5. 1877 ई. में लाहौर में उन्होंने अपने एक शिष्य गणपत राम से कहा कि वह तीस वर्ष से अधिक नहीं जियेगा अतः उसे विवाह न करना चाहिए। गणपत राम ने विवाह न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। परन्तु उसके पिता ने उस पर दबाव डालकर विवाह करा दिया। 28 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। यह घटना गणपत राम के भाई ताराचन्द ने मुजफ्फरपुर में पंडित केशवराम को सुनाई थी।

6. अमृतसर में जब स्वामी जी वेद भाष्य लिख रहे थे तो अचानक कमरे से बाहर आये और अन्य लोगों को भी बाहर आने को कहा। लोग आश्चर्य चकित हो गए। कुछ मिनटों बाद ही कमरे की छत गिर गयी।

7. उदयपुर में 1882 ई. में स्वामी

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

thearyasamaj.org



# उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

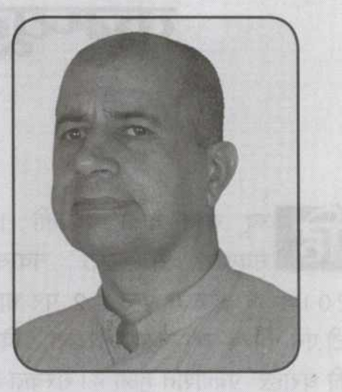

**शंका – क्या 'मन' पर पड़े 'संस्कारों' के विरुद्ध भी 'आत्मा' कार्य कर सकता है?**

**समाधान**– बिल्कुल कर सकता है।

● मन में जो संस्कार है, वो कहता है, चोरी कर लो। आत्मा कहता है– नहीं। आप उसके सामने अड़ जाओ। ठीक वैसे ही जैसे अभिमानी आदमी अड़ जाता है।

● संस्कार अपना स्वभाव दिखायेंगे। आलंबन उपस्थित होने पर संस्कार जाएंगें। मान लो, अभी आपकी आइसक्रीम खाने की इच्छा नहीं है। लेकिन यदि सामने प्लेट में आइसक्रीम परोस दी जाये, तो इच्छा जाग जायेगी। **आइसक्रीम आलबंन है, जिसके सामने उपस्थित होने पर संस्कार जागता और आइसक्रीम खाने की प्रेरणा देता है। उस संस्कार को दबाना, उससे लड़ना, यह आत्मा का काम है। यदि वो चाहे, जोर लगाये, तो वो लड़ सकता है, दबा सकता है, उससे जीत सकता है।** इसमें कोई शंका की बात नहीं है। इसी का नाम **'पुरुषार्थ'** है।

● दार्शनिक–मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि भाग्य से ज्यादा बलवान पुरुषार्थ है। इसलिये पुरुषार्थ करो, इन संस्कारों को दबाओ, इनको मारो। दो में से एक को मार खानी पड़ेगी। अब विकल्प–चयन आपके हाथ में है।

**106. शंका – आत्मा ही मन में विचार उठाती है और जीवात्मा शुद्ध–स्वरूप होती है, तो फिर मन में चोरी–व्यभिचार, हिंसा, असत्य आदि अनुचित अशुद्ध विचार क्यों आते हैं?**

समाधान– **प्रश्न का भाव है कि आत्मा मन के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है। आत्मा शुद्ध है, बुद्ध है, तो मन में अच्छे ही विचार आने चाहिये। तो हमारे मन में बुरे विचार क्यों आते हैं? यदि विचार आत्मा से उठते हैं तो यह हर समय सुविचारों को ही क्यों नहीं उठाता, क्योंकि आत्मा को पवित्र बताया गया है?**

● इसके बहुत सारे कारण हैं। बुरे विचार क्यों आते हैं इसका एक मुख्य कारण है, हमारे अपने संस्कार। आत्मा यद्यपि स्वरूप से शुद्ध व पवित्र है, शुद्ध होते हुये भी उसे जो ज्ञान है, वह कुछ शुद्ध है, कुछ अशुद्ध है। यानी कुछ तो विद्या है और उसमें कुछ अविद्या (उल्टा ज्ञान) भी है। अनेक जन्मों की अविद्या हमारे अंदर चली आ रही है। अविद्या नाम का एक दोष है, जो जीवात्मा के साथ जुड़ जाता है। अविद्या (उल्टे ज्ञान) के कारण वो मलीन हो जाता है। अपनी इच्छा से वो खराब काम नहीं करना चाहता, गलती नहीं करना चाहता। स्वयं तो वो अच्छी बात ही चाहता है, सुख ही चाहता है, अच्छे काम ही करना चाहता है। लेकिन जब यह अविद्या ऊपर से चिपक जाती है, तो उसके कारण यह जीवात्मा गड़बड़ विचार (उल्टी सोच) करता है। इसी अविद्या के दोष के कारण वो अच्छे विचार भी उठा लेता है और बुरे विचार भी उठा लेता है। अविद्या के कारण उसमें राग और द्वेष उत्पन्न हो जाते हैं।

● **अविद्या के प्रभाव से प्रेरित होकर जीवात्मा झूठ बोलता है, चोरी करता है, व्यभिचार करता है, अन्याय करता है, शोषण करता है, हिंसा करता है, निंदा–चुगली करता है।**

**अविद्या जीवात्मा को लपेट लेती है, क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ है।**

● ईश्वर सर्वज्ञ है, उसको अविद्या नहीं लपेट सकती, उसको अविद्या नहीं दबा सकती। वो इतना मजबूत है, कि अविद्या उसे नहीं सताती। जीवात्मा बेचारा कमजोर है, इसलिए अविद्या उसको आकर दबा लेती है, वो बेचारा पिट जाता है। इस प्रकार अविद्या के नीचे दबकर जीवात्मा उलटे–सीधे काम करता है। उस अविद्या के कारण, उन संस्कारों के कारण जीवात्मा बुरे विचार भी करता है।

● **इस प्रकार कुछ विद्या भी है और कुछ अविद्या भी है। यह दोनों नैमित्तिक हैं यानि यह बाहर से आती हैं।** कहीं अड़ोस–पड़ोस के लोगों से कुछ बुरी बातें सीख लेता है। उसके कारण बुरे विचार करता है। कुछ टेलीविजन से, कुछ कंप्यूटर से, कुछ टेलीफोन–मोबाइल से, कुछ इंटरनेट से, कुछ पढ़ाई लिखाई के सिलेबस से, कुछ मित्र–मण्डली से, कुछ सरकार के कानूनों से, ऐसे बहुत सारे कारण है, जिनसे व्यक्ति बुरे विचार भी कर लेता है।

● प्राकृतिक रजोगुण, तमोगुण की वजह से जीवात्मा में यह अविद्या, राग–द्वेष आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इस गड़बड़ी के कारण कभी–कभी वो बुरे विचार भी उठा लेता है, बुरे काम भी कर लेता है, गलत भाषा भी बोल देता है।

● जब व्यक्ति अविद्या को दूर कर लेता है तो हर समय सुविचार ही उठाता है। इसलिए कोशिश करनी चाहिये कि कि उन बुरे विचारों से बचें। उन बुरे विचारों को रोकें। अच्छे विचार करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छे कर्म करें। ऐसा हमको पूरा प्रयत्न करना चाहिये। इसका उपाय है – वेदों का अध्ययन, ईश्वर का ध्यान और निष्काम सेवा करना।

**107. शंका – मन में आते हुए विचारों को कैसे रोकें? संध्या, ध्यान आदि में अनेक विचारों से एकाग्रता टूट जाती है। क्या करें?**

**समाधान** – मन में विचारों की उत्पत्ति के दो कारण हैं– 'इच्छा' और 'प्रयत्न'। विचारों को रोकने का उपाय यही है, कि– **इच्छा को रोक दीजिये और प्रयत्न को रोक दीजिए। इससे मन में आने वाले विचार रुक जाएँगे।**

● योगदर्शन में पतंजलि महाराज ने दूसरे दो शब्दों का प्रयोग किया। पहला है– 'वैराग्य' और दूसरा है– 'अभ्यास'। वृत्तियों (विचारों) को रोकने के लिए बस ये दो उपाय– अभ्यास और वैराग्य हैं।

● लंबे समय तक दीर्घकाल तक अभ्यास में जुटे रहिये। निरंतर अभ्यास कीजिए। धीरे–धीरे मन एकाग्र होता जाएगा। जो विचार हम उठा लेते हैं, उन्हें मन से हटाते जाइये। इस तरह धीरे–धीरे अभ्यास करेंगे तो लाभ होगा। और थोड़ा वैराग्य बढ़ाइये। वैराग्य का मतलब– संसार से राग भी नहीं और द्वेष भी नहीं करना। इन दोनों से बचना।

● राग से कैसे बचें? संसार की वस्तुओं में सुख न लेवें। इससे धीरे–धीरे राग कम हो जाएगा। द्वेष से कैसे बचें? किसी भी परिस्थिति में दुःखी न हों। कैसे? जब छोटी–मोटी प्रतिकूल घटना हो, तब सोचें– 'कोई बात नहीं।' जब बड़ी घटना होवे, तब अपनी रक्षा का पूर्ण प्रयत्न तो अवश्य करें। फिर भी यदि संसार में न्याय न मिल पाए, तब सोचें– 'ईश्वर न्याय करेगा।' इस प्रकार से 'अभ्यास' और 'वैराग्य' दो उपाय हैं। इनसे वृत्तियों को रोका जा सकता है।

**108. शंका – शरीर, आत्मा और मन इनमें क्या संबंध है?**

**समाधान** – उपनिषदों में बतलाया है– शरीर एक रथ के सामान है। पहले रथ होते थे, आजकल कार होती है। तो चलो कार के उदाहरण से बताएंगे। जैसे शरीर है वैसे कार है। कार में पाँच चीजें हैं। कार का यात्री सेठ–एक, ड्राइवर–दो, स्टेयरिंग–तीन, पहिए–चार और सड़कें–पांच। ऐसे ही शरीर में यात्री के समान आत्मा, ड्राइवर के समान बुद्धि, स्टेयरिंग–व्हील के समान मन, पहियों के समान इंद्रियाँ और सड़कों के समान विषय हैं। इस तरह से इनमें सम्बन्ध समझना चाहिए।

**दर्शनयोग महाविद्यालय**
**रोजड़वन, गुजरात**

☞ पृष्ठ 04 का शेष

# महर्षि स्वामी दयानन्द ...

सहजानन्द सरस्वती ने स्वामी जी को झील की सतह पर पानी के ऊपर बैठे देखा। एक बार उन्होंने स्वामी जी को 24 घंटे की समाधि लगाये देखा था।

8. कर्नल अलकाट ने स्वामी जी की मृत्यु के बाद थियोसोफिस्ट में शोक संदेश में कहा था स्वामी जी ने मुझसे कुछ वर्ष पूर्व कहा था कि 1983 ई. का अन्त नहीं देख पायेंगे।

9. उदयपुर में जब स्वामी जी के साथ महामहिम महाराणा उदयपुर, स्वामी सहजानन्द व कुछ अन्य व्यक्ति बैठे थे स्वामी जी ने अचानक कहा पं. सुन्दरलाल जी आ रहे हैं वह यदि पहले से कहते तो सवारी का प्रबन्ध कर दिया जाता। महाराणा ने कहा कि सवारी तो अभी भी भेजी जा सकती है। इस समय तो वह बैलगाड़ी में आ रहे हैं। वह कल यहां पधारेंगे। पं. सुन्दरलाल अगले दिन उदयपुर पहुँचे।

10. स्वामी दयानन्द जी महाराज ने कहा था कि अपने शरीर के किसी भी अंग में अपना जीवन केन्द्रित कर सकता हूँ। शरीर का शेष भाग निर्जीव हो जायेगा।

**अधिष्ठाता उपदेश विभाग**
**प्रचार कार्यालय, मो. काली पगड़ी,**
**अमरोहा–9412322488**

thearyasamaj.org



# कम्प्यूटर हेतु सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत

● पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री

हिन्दू सभा वार्ता' दिल्ली 19 नवम्बर से 25 नवम्बर, 2014 के अंक में पृष्ठ 12 पर मान्य 'टी.एन. विश्व' का लेख "संस्कृत... विश्व की धरोहर" प्रकाशित हुआ है। संस्कृत की महत्ता बताते हुए वह लिखते हैं –

"नासा के वैज्ञानिकों का मानना है कि कम्प्यूटर अपनी अधिकतम सीमा का उपयोग संस्कृत भाषा के माध्यम से ही करेगा क्योंकि कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत ही है।"

लेखक ने यह स्पष्ट नहीं किया कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर में किस प्रकार सहायक है? क्या नासा के सभी वैज्ञानिक संस्कृत जानते हैं? क्या उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया है? जहां तक मेरा विचार है, एक भी वैज्ञानिक संस्कृतज्ञ नहीं होगा। यदि अपवाद रूप में कोई एकाध जानता भी हो तो उसकी संस्कृत का वैज्ञानिक अनुसंधान में कोई भी योगदान नहीं होगा, न ही उसकी कोई उपयोगिता रही होगी।

वस्तुतः भाषा तो विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। किसी भी वस्तु/सिद्धान्त आदि का अनुसंधान करने के लिए वैज्ञानिक की अपनी भाषा भी सहायक हो सकती है। भारत के 'इसरो' वैज्ञानिकों ने अनेक अनुसंन्धान/आविष्कार किए हैं। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम तो मिज़ाइल मैन के नाम से विख्यात हो गए। वे संस्कृत नहीं जानते। मंगलयान प्रेषित करने वाले वैज्ञानिक भी संस्कृत से अनभिज्ञ है। फिर भी उन्होंने अनुसन्धानात्मक प्रतिभा का सिक्का जमा दिया। इनमें भी निर्देशन, सन्देश प्रेषण–ग्रहण, विश्लेषण आदि कार्य कम्प्यूटर द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। क्या इनके संचालन, निर्देशन, सन्देश प्रेषण–ग्रहण, आदि में संस्कृत किसी प्रकार सहयोगी रही है? मेरे विचार से नहीं।

विभिन्न प्रकार के रोबोट, पायलट रहित विमान, ड्रोन भी तो अपने निर्देशित कार्यों को करते हैं और वह भी अत्यन्त स्टीक। यह भी तो वैज्ञानिकों का अनुसंधान है। वर्तमान समय में कल, कारखानों–कार्यालयों में विभिन्न प्रकार के कार्य कम्प्यूटरों द्वारा सम्पन्न होते हैं। इन सभी विभागों, कार्यालयों में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के कम्प्यूटरों में क्या संस्कृत की आवश्यकता अनुभव की गई? सम्भवतः नहीं।

एक प्रश्न और, क्या वैज्ञानिकों को इस संस्कृत ज्ञान के बिना उनके कार्यों में कोई गतिरोध आया? यदि, हां, तो क्या उन्होंने संस्कृत सीखी और कहां तक, कितनी? केवल व्यावहारिक संस्कृत अथवा शास्त्रीय?

यदि नहीं, तो फिर भला नासा के वैज्ञानिकों को इस प्रकार के बेतुके बयान देने की आवश्यकता क्यों पड़ी? कि "नासा... कम्प्यूटर में अपनी अधिकतम सीमा का उपयोग संस्कृत भाषा के माध्यम से करेगा।"

वस्तुतः कम्प्यूटर के हार्डवेयर अथवा साफ्टवेयर की रचना, कार्य की आवश्यकता/उद्देश्य के अनुसार होती है और उस यन्त्र, कल–पुर्जे की रचना बुद्धि के द्वारा होती है। इसमें वैज्ञानिक का रचनात्मक प्रतिभा कौशल कार्य करता है न कि भाषा। भाषा तो उन वैज्ञानिकों के पारस्परिक विचार–विमर्श हेतु सहायक होती है। वह कोई भी हो सकती है।

अन्य अनेक देशों में भिन्न–भिन्न भाषाएं भी हो सकती हैं। परन्तु संस्कृत के दर्शन कहीं नहीं होंगे! यह कटु सत्य है जिसे संस्कृतविदों को स्वीकार करना ही चाहिए।

वैसे किसी भाषा में साफ्टवेयर का निर्माण करके उसका अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया जा सकता है और हो भी रहा है। ATM आदि में अंग्रेजी/हिंदी का विकल्प विद्यमान है। मोबाइल फोन में भी हिन्दी/अंग्रेजी की सुविधा है।

संस्कृत के अनेक विद्वान अपने व्याख्यानों में संस्कृत की महत्ता का बखान करते हुए उसे कम्प्यूटर में सहायक बताते हैं। यह तो कबीर की अग्रलिखित उक्ति के अनुसार ही प्रतीत होता है– "बातन ही बातन में बैकुंठ बखानें।" कुछ ऐसी ही संस्कृत व्याख्याता भी हैं जो– "बातन ही बातन में कम्प्यूटर में संस्कृत बखानें" को चरितार्थ कर रहे हैं।

अनेक पत्र–पत्रिकाओं में लेख भी लिखे जाते हैं। परन्तु आज तक कोई भी ऐसा लेख देखने में नहीं आया जिसमें कम्प्यूटर में संस्कृत के प्रयोग की विधि बताई गई हो। किसी पुस्तक का भी उल्लेख नहीं किया गया जिसमें बताया गया हो कि अमुक प्रकार से संस्कृत कम्प्यूटर में सहायक है। ऐसे करतलध्वनीय व्याख्यानों और प्रशंसनीय मात्र लेखों से भला क्या लाभ?

क्या ही अच्छा हो, कम्प्यूटरीय रचना विज्ञान से परिचित कोई संस्कृतज्ञ सज्जन इस पर विस्तृत प्रकाश डालें। ऐसे विद्वानों की जानकारी दें, जिन्होंने इस पर अनुसंधान किया हो। उनकी क्या उपलब्धि रही? संस्कृत किस प्रकर सहायक सिद्ध हुई?

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में इसे भेजने का प्रमुख उद्देश्य यही है कि शायद कहीं से कुछ ज्ञात हो सके। केवल कोरे व्याख्यानों से बात नहीं बनेगी। विद्वानों की टिप्पणियां/प्रतिक्रियाएं सादर आमन्त्रित हैं।

4–E, कैलाश नगर,
फाजिलका, पंजाब
09463428299

# Thus Spoke Swami Dayanand

- Devotion to whatever promotes the good of the world as well as abstinence from all harmful acts are the chief duties of man.
- Let a man never associate with those who are atheists and liars, nor with those who are indolent, guilty of breach of faith, hypocritically selfish and deceitful.
- Let a man always move in the society of men who are learned, truthful, pious and have public good at heart. This, in truth, constitutes good conduct.
- Let all good men remember that good conduct consists only in the avoidance of untruthfulness, injustice, inordinate affection or harted and other evil habits and in the practice of love and kindness towards all, in the cultivation of gentle disposition and in the promotion of public good, etc
- Religion has reference to one's soul and good life.
- They (people) cannot progress when they do not rejoice in each other's joys, nor sympathize in each other's afflictions.
- The causes of foreign rule in India are:— mutual feud, differences in religion, want of purity in life, lack of education, child-marriage, marriages in which the contracting parties have no voice in the selection of their lifepartners, indulgence in carnal gratification, untruthfulness and other evil habits, the neglect of the study of the Veda, and other malpractices.
- The use of all such food and drinks as are obtained through injuring or killing others or through theft, dishonesty, breach of faith, fraud or hypocrisy is forbidden.

Compiled by — Satyapriya,
09868426592
(Sourced from the English translation of 'Satyarth Prakash' by Dr. Chiranjiv Bhardwaj and published as 'The Light of Truth' from D.A.V. Publication Division)

thearyasamaj.org



# बिना आन्तरिक अन्वेषण, तप और अभ्यास के प्रार्थना अधूरी है

● भारतेन्दु सूद

प्रार्थना में हम प्रभु का धन्यवाद करते हैं, प्रभु के गुणों का गान करते हैं और प्रभु से बहुत कुछ ऐसा मांगते हैं जो कि हमें सुधारे और बेहतर इन्सान बनाये। उदाहरण के लिए हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे दुर्गुण–काम, क्रोध, लोभ सारे दुर्गुण, दर्व्यसन अर्थात् खराब आदतों व दुखों को दूर कर दीजिये, ताकि जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ –जैसे धैर्य, सहनशीलता, विनम्रता, सन्तोष हैं हमे प्राप्त हों। इन सभी को मांगने का उद्देश्य यही है कि हम बेहतर इन्सान बने।

परन्तु साथ में प्रार्थना के समय कुछ देर शान्त रहकर यह मनन करने की भी आवश्यकता है कि क्या हमने सचमुच इन बुराइयों पर विजय पा कर इन अच्छाइयों को ग्रहण किया है, अगर पूरा नहीं किया तो कितना किया है। जब आप ईमानदारी से अन्वेषण और मनन करेंगे तो आप यह स्वयं ही जाच सकते है। उदाहरण के लिये–आप को किसी बात पर काम करते हुये कार्यस्थल पर क्रोध आ गया जब आप शाम को या सुबह प्रार्थना करते समय अपना आन्तरिक अन्वेषण करते हैं, मनन करते है तो एकदम यह बात आपको छू जायेगी कि आपने आज क्रोध किया, फिर आप और दृढ़ संकल्प करते हैं कि अगली बार नहीं करुँगा, यही प्रार्थना का फायदा है। यदि आप आन्तरिक, अन्वेषण और मनन नहीं करते हैं तो आपकी प्रार्थना अधूरी है। साथ में यह भी आवश्यक है कि प्रार्थना करते हुए हम हर एक शब्द का मतलब जान न कि एक गाने की तरह से जल्दी–जल्दी बोलकर खत्म करें। मनन भी तभी होगा जब महत्त्व को समझेंगे।

**इसके बाद अगला कदम है तप और अभ्यास**

तप और अभ्यास भी प्रार्थना का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि उस प्रार्थना का कोई मतलब नहीं और एक कर्मकाण्ड बन कर ही रह जाती है जब तक कि हम प्रार्थना में कही बातों को पूरा करने के लिए तप और अभ्यास नहीं करते। क्रोध न आये उस के लिए तप और अभ्यास करना पड़ेगा। जैसे ही क्रोध की स्थिति आये, उससे निपटने के लिए तप और अभ्यास दोनों ही चाहिए। उदाहरण के लिए आर्य समाज में शान्ति पाठ तो कर लिया पर उसके बाद आपस के लड़ाई झगड़े शुरू कर दिये तो वह प्रार्थना, प्रार्थना नहीं रहती महज समय की बरबादी है।

जब तक मन शान्त और स्थिर नहीं हो जाता प्रार्थना में मन नही लगेगा। प्रश्न उठता है, व्यक्ति का मन शान्त कब होता है? इसका जवाब है जब आदमी दया–क्षमा–प्यार–नम्रता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, और क्रोध, अहंकार, लोभ, काम आदि से दूर रहता है तब मन शान्ति से भर जाता है।

231, सैक्टर–45–I
चण्डीगढ़–160047
9217970381

# हमें गोली से उड़ाया जाए

फांसी पर लटकाए जाने से 3 दिन पूर्व–20 मार्च, 1931 को– सरदार भगत सिंह और उनके सहयोगियों–राजगुरु और सुखदेव ने निम्नांकित पत्र के द्वारा सम्मिलित रूप से पंजाब के गवर्नर से मांग की थी कि उन्हें युद्धबंदी माना जाए और फांसी पर लटकाए जाने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाए। यह पत्र इन राष्ट्रवीरों की प्रतिभा, राजनीतिक मेधा, साहस एवं शीर्ष की अमरगाथा का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।– संपादक

20 मार्च, 1931
प्रति, गवर्नर पंजाब, शिमला

महोदय

उचित सम्मान के साथ हम नीचे लिखी बातें आपकी सेवा में रख रहे हैं–

भारत की ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी वाइसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी करके लाहौर षड्यंत्र अभियोग की सुनवाई के लिए एक विशेष न्यायाधिकरण (ट्रिब्यूनल) स्थापित किया था, जिसने 7 अक्तूबर, 1930 को हमें फांसी का दंड सुनाया। हमारे विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि हमने सम्राट् जॉर्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है।

न्यायालय के इस निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं–

पहली यह कि अंग्रेज जाति और भारतीय जनता के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दूसरे यह कि हमने निश्चित रूप में इस युद्ध में भाग लिया है, अतः हम युद्धबंदी है।

यद्यपि इनकी व्याख्या में बहुत सीमा तक अतिशयोक्ति से काम लिया गया है तथापि हम कहे बिना नहीं रह सकते कि ऐसा करके हमें सम्मानित किया गया है। पहली बात के संबंध में हम तनिक विस्तार से प्रकाश डालना चाहते हैं। हम नहीं समझते कि प्रत्यक्ष रूप में ऐसी लड़ाई छिड़ी हुई है। हम नहीं जानते कि युद्ध छिड़ने से न्यायालय का आशय क्या है? परंतु हम इस व्याख्या को स्वीकार करते हैं और साथ ही इसे इसके ठीक संदर्भ में समझाना चाहते हैं।

**युद्ध की स्थिति**

हम यह कहना चाहते है कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी तब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है– चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूंजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूंजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ता। यदि आपकी सरकार कुछ नेताओं या भारतीय समाज के मुखियों पर प्रभाव जमाने में सफल हो जाए, कुछ सुविधाएं मिल जाएं अथवा समझौते हो जाएं, इससे भी स्थिति बदल नही सकती तथा जनता पर इसका प्रभाव बहुत कम पड़ता है। हमें इस बात की भी चिंता नहीं कि युवकों को एक बार फिर धोखा दिया गया है और इस बात का भी भय नहीं है कि हमारे राजनीतिक नेता पथभ्रष्ट हो गए हैं और वे समझौते की बातचीत में इन निरपराध, बेघर और निराश्रित बलिदानियों को भूल गए हैं, जिन्हें दुर्भाग्य से क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य समझा जाता है। हमारे राजनीतिक नेता उन्हें अपना शत्रु मानते हैं, क्योंकि उनके विचार में वे हिंसा में विश्वास रखते हैं। हमारी वीरांगनाओं ने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया है। उन्होंने अपने पतियों को बलिबेदी पर भेंट किया, भाई भेंट किए, और जो कुछ भी उनके पास था, सब न्योछावर कर दिया। उन्होंने अपने आपको भी न्योछावर कर दिया। परंतु आपकी सरकार उन्हें विद्रोही समझती है। आपके एजेंट भले ही झूठी कहानियां बनाकर उन्हें बदनाम कर दें और पार्टी की प्रसिद्धि को हानि पहुंचाने का प्रयास करें, परन्तु यह युद्ध चलता रहेगा।

**युद्ध के विभिन्न स्वरूप**

हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न–भिन्न दशाओं में भिन्न–भिन्न स्वरूप ग्रहण करे। किसी समय यह लड़ाई प्रकट रूप ले ले, कभी गुप्त दशा में चलती रहे, कभी भयानक रूप धारण कर ले, कभी किसान के स्तर पर युद्ध जारी रहे और कभी यह घटना इतनी भयानक हो जाए कि जीवन और मृत्यु की बाजी लग जाए। चाहे कोई भी परिस्थिति हो, इसका प्रभाव आप पर पड़ेगा। यह आपकी इच्छा है कि आप जिस परिस्थिति को चाहे चुन लें, परन्तु यह लड़ाई जारी रहेगी। इसमें छोटी–छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। बहुत संभव है कि वह युद्ध भंयकर स्वरूप ग्रहण कर ले। पर निश्चय ही यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढांचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रांति समाप्त नहीं हो जाती और मानवी सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नहीं हो जाता।

**अंतिम युद्ध**

निकट भविष्य में अंतिम युद्ध लड़ा जाएगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूंजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। यही वह लड़ाई है जिसमें हमने प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया है और हम अपने पर गर्व करते हैं कि इस युद्ध को न तो हमने प्रारंभ ही किया है और न यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा। हमारी सेवाएं इतिहास के उस अध्याय में लिखी जाएंगी जिसको यतींद्रनाथ दास और भगवतीचरण के बलिदानों ने विशेष रूप से प्रकाशमान कर दिया है। इनके बलिदान महान् हैं। जहां तक हमारे भाग्य का संबंध है, हम जोरदार शब्दों में आपसे यह कहना चाहते हैं कि आपने हमें फांसी पर लटकाने का निर्णय कर लिया है। आप ऐसा करेंगे ही, आपके हाथों में शक्ति

*शेष पृष्ठ 11 पर*

thearyasamaj.org



# नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

बेटी बचाओ' अभियान से महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों पर प्रभाव अवश्य पड़ेगा। वैसे भी आज विज्ञान के विकास के युग में सामाजिक उन्नति अत्यधिक आवश्यक है। सामाजिक उन्नति हेतु ही ऋषि दयानन्द ने समाज में फैली कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास किया व वेद का प्रकाश किया। वह चाहते थे कि अन्धविश्वासों को दूर कर समाज को उज्जवल बनाया जाय।

आज बेटियों पर अत्याचार हो रहे हैं जिसमें भ्रूण हत्या सर्वविदित है। पहले सती प्रथा होती थी, स्त्रियां जौहर करती थीं। एक साथ अग्नि में कूद कर प्राणान्त कर लेती थीं। विधवा हो जाने पर पुनर्विवाह नहीं होता था। दहेज की अतिरिक्त मांग के फल स्वरूप भी बेटियों को गला घोंट कर, जला कर या प्रताड़ित कर मार दिया जाता है। महिलाओं के साथ आज बलात्कार जैसे यौन उत्पीड़न की घटनाएं भी बढ़ती जा रही हैं ग्राम से लेकर नगर व महानगरों में यह रोग बढ़ रहा है। जिस प्रकार से असामाजिक तत्व बेटियों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं इससे बेटियों के मन में हीन भावना आनी निश्चित है। उनका दृष्टिकोण ऐसे प्रदूषित समाज के प्रति घृणा से भर जाएगा और वह दिन दूर नहीं जब बेटियों की संख्या अनुपात में बेटों से अत्यधिक कम हो जाएगी। तब बेटों के लिए वधु कहाँ से लाएंगे। इस क्षेत्र में जागरूकता आनी आवश्यक है। कुछ व्यक्तियों की धारणा अधिकांशतः वेद विरुद्ध है। उनके अनुसार बेटा ही वंश चलाता है । ऐसी उनकी भ्रान्ति है वेदानुसार पुत्र एवं पुत्री एक समान हैं। दोनों का लालन–पालन, शिक्षा एक समान होना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने प्रकाश किया है।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् ।।

–अथर्ववेद अ. 3, पृ. 24, का. 11, मं. 18

जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी अपने अनुकूल प्रिय सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं वैसे कुमारी (कन्या) ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृश प्रिय विद्वान और पूर्ण युवावस्था युक्त पुरुष को प्राप्त होवे। इसलिए स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिए।

विदेशी आक्रमणों से भारत देश परतंत्र हो गया तब वेद ज्ञान प्रवाह अवरुद्ध हो गया तथा पौराणिकता की हवा चलने से वेद–विरुद्ध कार्य होने लगे। स्त्रियों के लिए वेद पढ़ने को प्रतिबन्ध लगा दिया ''स्त्री शूद्रौ नाधीयातमिति श्रुतेः।'' परन्तु इसके विरुद्ध ऋषि दयानन्द ने स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिया।

सत्यार्थ प्रकाश में प्रकाश किया है ''देखो! आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं क्योंकि जो न जानती होतीं तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकतीं? और युद्ध कर सकतीं।''

जब स्त्रियों को हीन दृष्टि से देखा जाने लगा, उनको वेद पढ़ने का अधिकार न दिया गया, घर से बाहर निकलना भी बन्द कर दिया, पर्दा प्रथा चालू हो गई, पर्दे में रहने को विवश रहना पड़ा, शिक्षा (Education) से वंचित कर दिया गया और यहाँ तक कि बेटी को जन्म लेते ही मार दिया जाने लगा। अब गर्भ का अल्ट्रासाउन्ड करा यदि पता चला कि गर्भ में बेटी है तो ऐसी दुष्ट मानसिकता के व्यक्तियों ने गर्भपात कराना आरम्भ कर दिया अर्थात् भ्रूण हत्या जो कि जीवित व्यक्ति की हत्या करने जैसा ही अपराध है अपनी सन्तान का ही गर्भ में गला घोंटना है। भ्रूण हत्या न हो ऐसी जागरूकता भी आर्य समाज ने ही आज जन जन में उत्पन्न की है। आर्य समाज इन बुराइयों के विरोध में उठ खड़ा हुआ। इन्दिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, किरण बेदी उच्च पद प्राप्त किए हैं। लक्ष्मी बाई, झांसी की रानी रही। पीटी ऊषा ने भारत का गौरव खेलों में बढ़ाया–आज महिलाएँ शासकीय, गैर। शासकीय अनेक क्षेत्रों में अग्रणी हैं। संगीत सम्राट लता मंगेशकर को कौन नहीं जानता। सब भारत की बेटियाँ ही तो हैं जो गर्व की बात है। आज न्यायाधिकारी, अच्छी चिकित्सक, इंजिनियर व पायलट भी सेवा में भी कार्यरत हैं। जिला अधिकारी व अन्य प्रशासनिक सेवाओं में महिलाएँ पुरुषों से आगे कार्यरत हैं। यह ऋषिवर दयानन्द की ही देन है जो कि आज भारत में नारी शक्ति का जागरण हुआ नारियाँ शिक्षा में आगे हैं सेवा में भी आगे है यह अतीव गर्व की बात है ऋषि दयानन्द ने ही सर्व प्रथम स्त्री शिक्षा का बिगुल बजाया था। जब भारत परतंत्र था अंग्रेजी शिक्षा के विद्यालय खुल रहे थे वहां भारतीयों को ईसाई मत में प्रवेश कराया जा रहा था। ऋषि दयानन्द ने पाठशालाएँ खुलवाईं अपनी संस्कृति का महत्व बताया। वेद का महत्व बताया और बताया कि स्त्रियों को भी शिक्षा का अधिकार है। प्राचीनकाल में स्त्रियाँ वेद पढ़ती थीं, गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, कुन्ती, कैकेयी जैसी महिलाएँ वेद की विद्वान थीं। आर्य समाज आज भी नारी के उत्थान के लिए संघर्ष कर रहा है।

दहेज का दानव भी आज सिर चढ़ कर बोल रहा है। सहस्त्रों बेटियां दहेज की बलि वेदी पर चढ़ाई जा रही दहेज के लिए महिलाओं की हत्या कर दी जाती है; उत्पीड़न किया जाता हैं। सरकार व समाज को इस विषय में गम्भीरता से विचार कर दहेज प्रथा को समूल नष्ट कर महिलाओं की सुरक्षा करनी चाहिए। इसमें सर्व प्रथम तो विवाहोत्सव में खर्चे पर नियंत्रण करना आवश्यक है। आज विवाह का स्वरूप केवल दिखावे में बदल गया है। बड़े–बड़े मैरिजहोम अत्यधिक खर्चे में किए जाते हैं जहां सजावट व दावत, बैण्ड बाजा, आतिशबाजी तथा लेन–देन में अत्यधिक खर्चा किया जाता है। होना यह चाहिए कि चाहे धनी हो या निर्धन सबके लिए विवाह हेतु एक जैसा नियम होना चाहिए। जब बारात चढ़ती है तब नगर व महानगरों में यातायात तक अवरुद्ध हो जाते हैं। यही नहीं बाराती मद्यपान कर भोंडे नाच करते कूदते हैं। यहाँ तक कि महिलाएँ भी नाचने लगती हैं। आने जाने वालों का रास्ता बाधित करते हैं। बारातियों की संख्या भी अधिक होती है, दिखावे के लिए लोग अधिक से अधिक लोगों को निमंत्रण देते हैं जिससे अन्य लोग इससे उनकी प्रतिष्ठा को जान सकें। यह सही है कि सम्बन्ध होते हैं, परन्तु उनका विवाह में मेला लगाने से तो कोई लाभ नहीं। विवाहोत्सव में घराती बाराती सबकी संख्या सीमित कर निर्धारित होनी चाहिए। मुख्य सम्बन्धी व मित्र ही विवाह में सम्मिलित होने चाहिए। विवाह का प्रयोजन है वर वधु का नया जीवन चलाना। इसमें उन्हें विवाह संस्कार में हुए विभिन्न कार्य व बिन्दुओं पर प्रकाश डालना चाहिए। जीवन को कैसे जिएं इसका ज्ञान देना उचित है पति पत्नी के क्या दायित्व हैं, ग्रहस्थाश्रम के सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डालना चाहिए।

आज की बेरोजगारी के समय में इतना धन व्यर्थ में बहाना कोई औचित्य नहीं रखता। विवाह उत्सव साधारण व कम खर्च वाला होना चाहिए जिनके पास अथाह धन है आवश्यकता से भी अधिक है वह भी नहीं होना चाहिए क्योंकि वह मजदूरों, कामगारों, परिश्रमियों आदि की मेहनत का ही होता है। रिश्वत खोरी का हो सकता है। परिश्रम से कमाया धन यदि इस प्रकार से बहाया जाए तो वह भी ठीक नहीं है। परिश्रम करो फिर जीवन भर की मेहनत से कमाया धन दानी की भांति वहां दे। एक दम ठीक नहीं क्योंकि वह धन भी राष्ट्र का ही है जिसे समाज की उन्नति में लगाया जा सकता है, निर्धनों की सेवा में लगाया जा सकता है, निर्धन की बेटी का विवाह कराने में लगाया जा सकता है, निर्धनों को वस्त्र, निवास व भोजन हेतु लगाया जा सकता है पहले लोग प्याऊ, कूएँ, बावड़ी, बाग, बगीचे, धर्मशालाएं बनवाते थे। आज धन को अपनी झूठी प्रतिष्ठा हेतु बहाया जाता है, पाठशाला व आश्रम। वेद प्रचार सम्बन्धी कार्यों में धन का उपयोग करना चाहिए।

विवाह में खर्च की सीमा तय कर सबके लिए एक जैसा नियम बनना चाहिए। दहेज पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए, दहेज मांगने वालों हेतु कठोर दण्ड का विधान होना चाहिए, दहेज लोभी समाज के लिए अभिशाप हैं।

आर्य समाज ने बाल विवाह, सती प्रथा को दूर करने का अभियान चलाया, विधवा का पुनर्विवाह होने को जाग्रत किया, भ्रूण हत्या का विरोध किया, दहेज प्रथा का विरोध आर्य समाज कर रहा है। आगे भी बेटियों की रक्षा के लिए आर्य समाज का दायित्व बनता है कि विवाह का सम्पूर्ण देश में एक नियम व नीति निर्धारित की जानी चाहिए। दहेज का समूल नाश करना, अत्यधिक धन का दुरुपयोग, बारातों का मेला की तरह दिखावा, बारातों में भोंडे नाच, मद्यपान, बाजारों में बारात द्वारा यातायात में बाधा तथा विवाह में संस्कार वेद विहित होने पर बल देना चाहिए। यह सब बेटियों के हित में है।

चन्द्र लोक कालोनी, खुर्जा

thearyasamaj.org



# प्राचीन भारत में विज्ञान

● कृपाल सिंह वर्मा

प्राचीन भारतीयों का वैज्ञानिक ज्ञान अत्यन्त उच्च कोटि का था। उनके वैज्ञानिक ज्ञान की झलक उस समय की विज्ञान की पुस्तकों के अवशिष्ट पन्नों से लगती है।

(1) प्राचीन भारतीय चुम्बक, चुम्बकीय क्षेत्र तथा चुम्बकीय तरंगों के विज्ञान को जानते थे। वे चुम्बकीय तरंगों की सहायता से छुपी हुई धातु वस्तुओं का चित्र पर्दे पर प्राप्त कर लेते थे।

देखिए वृहद् विमान शास्त्र पेज–151

**''उक्तेषु मणि वर्गेषु प्रतिबिम्ब अपकर्षणे। शास्त्रज्ञैः चुम्बकमणि श्रेष्ठं इति उच्यते क्रमात्।। 47।।**

अर्थ–छुपी धातु वस्तुओं का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए चुम्बक मणि सर्वश्रेष्ठ होती है। वैज्ञानिकों का ऐसा मत है।

(2)चुम्बकीय तरंगों की सहायता से जिस पर्दे पर चित्र बनता है, उसको बनाने में जिस Chemical Compound का उपयोग होता था उसे पारगन्धिक द्रावक कहते थे। उसके बनाने की विधि विमान शास्त्र के पेज–151 पर लिखी है। उसके विषय में श्लोक 47 है–

**''उपयुक्तं भवेत् तस्मात् पारगन्धिक द्रावकम्। सम्पादयेत् विशेषेण प्रतिबिम्ब अपकर्षणे।। 47।।**

अर्थ–पारगन्धिक द्रावक का उपयोग छुपी वस्तु का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

(3)कुछ वृक्षों से अदृश्य किरणें निकलती हैं। इनका उपयोग छुपी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए किया जाता था।

देखिए वृहद विमान शास्त्र के पेज–150

**''प्रतिबिम्ब अपकर्षणे आदि शक्तयः पंच सर्वदा। यतः अंजिष्ठ वृक्ष गर्भे प्रकाश्यन्ते स्वमावतः।। 36।।**

अर्थ–वृक्षों में यह अंजिष्ठ वृक्ष ही यन्त्र क्रिया विधि में अत्यन्त श्रेष्ठ है। यह कथन अदृश्य रश्मि विज्ञान की पुस्तक ''अगतत्व लहरी'' से लिया गया है।

(4)बिम्ब आकर्षण निर्यास–

प्रतिबिम्ब ग्रहण करने वाले गोंद जैसे यथार्थ को बिम्ब आकर्षण निर्यास कहते हैं। इसको बनाने की विधि लिखी है। इसके विषय में पेज 152 पर श्लोक 51 में कहा है–

**''षष्टी उत्तर त्रिशत् निर्यास वर्गेषु ज्ञान वित्तमा। रूप आकर्षण निर्यासं प्रतिबिम्ब अपकर्षणे।। 51।।**

अर्थ–360 निर्यास वर्गों में रूप आकर्षण निर्यास प्रतिबिम्ब आकर्षण में अत्यन्त श्रेष्ठ कहा है। निर्यास गोंद जैसा पदार्थ होता है जिससे प्रतिबिम्ब करने वाला पर्दा बनता है।

(5)पटदर्पण का निर्माण–

छुपी वस्तु का चित्र लेने वाला पर्दा– पेज 153 पर निर्यास पट दर्पण बनाने की विधि लिखी है। उसका वर्णन श्लोक 67 में इस प्रकार है।

**एवं कृते सूक्ष्म् अतीव शोमितं भवेद् दृढं तत् पट दर्पणं शुभम्। परोक्ष वस्तु प्रतिबिम्ब संग्रहे तु सतत् पट आदर्शं इतः इतं बुद्धै।। 67।।**

अर्थ–ऐसा करने पर सूक्ष्म अतीव शोभित दृढ़ शुभ दर्पण हो जावे जो छिपी वस्तु का प्रतिबिम्ब लेने में यह परदा विद्वानों ने श्रेष्ठ बताया है।

(6)यह स्क्रीन वाला यन्त्र विमान में कहां लगे तथा इसका लाभ क्या है, यह निम्न श्लोक 68 में पेज–153 पर बताया है–

**''यान कुक्षि मुखे तु एतत् यन्त्र संस्थापयेद् दृढ़म्। एतस्मात् संभवेत् यान त्रासानं न अत्र संशय।। 51।।**

अर्थ– विमान के कुक्षि मुख में इस यन्त्र को दृढ़ स्थापित करें। इससे विमान की रक्षा हो जावे इसमें संशय नहीं है। कुक्षि मुख = Pilot Cabin.

(7)इस प्रकार के छिपी वस्तु का प्रतिबिम्ब प्राप्त करने के लिए विद्युत चुम्बक तरंगों का प्रयोग होता था जो श्लोक 11 पेज 147 से स्पष्ट है।

**''सन्धारयेत् दृढ पश्चात् पारग्रन्थिक द्रावके। स्थापयेत् चुम्बक मणि तन्त्रीमूलाः च तत्मुखे।।11।।**

अर्थ–पारगन्धिक द्रावक में चुम्बक मणि को तथा विद्युत तारों को स्थापित करें।

पारगन्धिक द्रावक = The name of a Chemical that makes the picture of the hidden object with the help of electromagnetic waves. The revival of Vedic Science is very necessary and important to understand our Rishis the Vedic Scientists.

हमारे वैदिक ऋषियों के पास विज्ञान का अत्यन्त उच्च कोटि का ज्ञान था। उनको समझने के लिए वैदिक विज्ञान का पुनः उदय होना अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा आवश्यक है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम वैदिक विज्ञान को फिर से जीवित करें तथा विद्यार्थियों को वैदिक विज्ञान एक विषय के रूप में पढ़ायी जाये। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में इस प्रकार के यन्त्रों का वर्णन मिलता है जो मानसिक संकेतों (Mind Signals) पर कार्य करते थे। अभी तक केवल Sound Signal पर काम करने वाले यन्त्रों का ही आविर्भाव हुआ है।

**253 शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ।**
**मो. 9927887788**

# परलोक यात्रा की एड्वांस बुकिंग

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

आजकल प्रायः सभी क्षेत्रों में एडवांस बुकिंग का प्रचलन है। चाहे रेल यात्रा हो या बस यात्रा, हवाई यात्रा हो या मकान खरीदने की लालसा, सर्वत्र बुकिंग ही बुकिंग है। यह तो हुई, भौतिक जगत में साधारण यात्रा की बुकिंग, पर क्या परलोक गमन के लिए भी एडवांस बुकिंग हो सकती है? क्या है इसका उत्तर, हाँ या ना? मेरी दृष्टि में तो हाँ हो सकती है परलोक गमन के लिए एडवांस बुकिंग।

अच्छा, पहले यह समझते हैं कि हम अपने यहाँ एडवांस बुकिंग के लिए करते क्या हैं? रेलवे या बस की बुकिंग के लिए हम घंटों लाइन में खड़े रहते हैं। रेल यात्रा के लिए तो दो–दो महीने पहले बुकिंग करनी पड़ती है। इसी प्रकार परलोक में अच्छी योनि प्राप्त करने के लिए हम जो साधना, तप, संध्या, हवन आदि पुण्यदायी कार्य करते हैं, यह भी तो एक प्रकार की एडवांस बुकिंग ही तो है। जिनकी कोशिश करने पर एडवांस बुकिंग नहीं होती तो वे सीट पाने के लिए 'तत्काल' टिकट खरीदते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में साधक 'तत्काल' मुक्ति के लिए योग का सहारा लेते हैं। एडवांस बुकिंग की परम्परा बहुत पुरानी है। आप यह भी कह सकते हैं कि यह परम्परा वैदिक काल से ही प्रचलित है। जिसके लिए हमारे ऋषि–मुनियों ने 'अध्यात्म यात्रा' का प्रयोग किया है उसी के लिए हम आधुनिक संदर्भ में 'एडवांस बुकिंग' शब्द का प्रयोग कर रहे हैं।

आइये, वैदिक साहित्य में एडवांस बुकिंग का एक उदाहरण टटोलते हैं। संध्या करते समय हम एक समर्पण मंत्र बोलते हैं : 'हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयानेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थं काम मोक्षाणां सद्यःसिद्धि र्भवेन्नः इस मंत्र में धर्म, अर्थ और काम वे सोने के सिक्के या रुपये पैसे हैं जिनसे हम एडवांस बुकिंग के रूप में 'सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः' (मोक्ष) का टिकट खरीदते हैं। क्या यह मंत्र एडवांस बुकिंग का सुन्दर उदाहरण नहीं है? आज हम जिस स्थिति में हैं, मनुष्यत्व के जिस पायदान में खड़े हैं क्या वह पिछले जन्म के शुभकर्म रूपी एडवांस बुकिंग का पुण्य फल नहीं है? यदि ऐसा न होता तो क्या हमें मानव शरीर मिलता? यदि अन्य पशु–पक्षियों के पास शुभ कर्मों के रूप में एडवांस बुकिंग की क्षमता होती तो क्या उन्हें भी मानव का चोला न मिलता?

अब गीता के आधार पर विचार करते हैं। गीता का श्लोक है :

**सत्वस्थाः ऊर्ध्वगच्छन्ति मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।**
**जघन्य कर्म वृत्तिस्थाः अधोगच्छन्ति तामसाः।।**

इस श्लोक में सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी व्यक्तियों का वर्णन किया गया है। जो सतोगुणी हैं अर्थात् जिन्होंने समय रहते हुए परलोक के लिए शुभकर्मों की एडवांस बुकिंग कर ली है वे 'ऊर्ध्व' अर्थात् स्वर्ग के ए.सी. डिब्बे में यात्रा करते हैं। जो रजोगुणी हैं जिन्होंने एडवांस बुकिंग तो नहीं की पर लाइन में खड़े होकर टिकट ली है वे मध्य अर्थात् सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में यात्रा करते हैं अर्थात् वे मनुष्य लोक में जन्म लेते हैं लेकिन जो तमोगुणी हैं, विदाउट टिकट हैं और साथ में नशे का बोरा की बोरी रहे हैं वे 'अधोलोक' (नरक) अर्थात् जेल की यात्रा करते हैं।

आजकल एडवान्स बुकिंग के नाम पर धोखे व घोटाले भी हो रहे हैं। तथाकथित धर्माचार्य या धर्म के ठेकेदार साधारण जनता के सम्मुख अपनी बात को इस ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि उन्हीं के द्वारा बनाए गए मार्ग के द्वारा मुक्ति संभव है। वे अपने भक्तजनों के हृदय में यह बात कूट–कूट कर भर देते हैं कि गुरु बिना गति नहीं। आसाराम बापू इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है जो आज स्वयं जेल की हवा खा रहा है।

एक बात ध्यान देने की है। जब आप एडवांस बुकिंग की लाइन में खड़े हो तो सावधान रहें क्योंकि काम, क्रोध, लोभ, मोह रूपी जेबकतरे आपके दया, करुणा, आस्था, देशभक्ति आदि सिक्कों से भरी जेब को काट सकते हैं। जो जितने समझदार होते हैं वे उतनी जल्दी एडवांस बुकिंग की लाइन में खड़े हो जाते हैं। महात्मा बुद्ध ने जब एक वृद्ध व्यक्ति और उसके बाद जब एक मृत व्यक्ति को देखा तो वे इस रहस्य को भलीभांति समझ गए कि मुझे भी महायात्रा करनी पड़ेगी परिणामतः वे साधना की एडवांस बुकिंग की लाइन में खड़े हो गए। महर्षि दयानन्द ने जब शिव–मूर्ति पर उछल–कूद करते हुए चूहे को देखा तथा अपने चाचा और बहिन को इस संसार से विदा होते हुए निहारा तो वे भी चिरयात्रा या महायात्रा की अनिवार्यता को समझ गए और उसके बाद उन्होंने जो भी महान कार्य किए, वे सब एडवांस बुकिंग की लाइन में खड़े होकर किए।

अब बारी आपकी और हमारी है। यदि आपको पूर्ण विश्वास है कि एक दिन हम सबको भी सब कुछ छोड़कर परलोक यात्रा पर जाना है तो मेरी तरह परलोक प्रस्थान के लिए अभी से एडवांस बुकिंग की लाइन में खड़े हो जाइये। आइये, मेरे पीछे, हो गए खड़े? ठीक है।

**230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम**
**ज्वालापुर (हरिद्वार)**
**मो. : 9639149995**

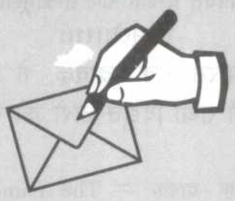

# पत्र/कविता

## श्री राम बन जाओ तुम

श्री राम की महिमा गाओ, सकल जगत के नर–नारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।
माता–पिता, गुरु, वृद्धों की, सेवा रघुवर करते थे।
दुखिया दीन अनाथ जनों की पीड़ाएं वे हरते थे।।

चरित्रहीन अन्याई पापी, श्री राम से डरते थे।
वीर व्रतधारी रघुनन्दन, जग में निडर विचरते थे।।
पूजा पालक धर्म धुरन्धर, दयावान थे तपधारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

काल, रावण के जुल्मों से, दुखी विश्व यह सारा था।
ऋषियों–मुनियों विद्वानों का जग में नहीं सहारा था।

त्रिसरा अरू मारीच, सुबाहू, करते थे खल मन मानी।
विश्वामित्र, अगस्त्य, अत्रीय, व्याकुल थे ज्ञानी–ध्यानी।।
श्री राम की महिमा गाओ, सकल जगत के नर–नारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

रघुकुल भूषण श्री राम जी, अगर न भारत में आते।
नर्क धाम जग बन जाता, सब ईश्वर भक्त कष्ट पाते।।
ईश्वर भक्त सज्जनों से था, श्री राम को प्यार सुनो।
धर्म–कर्म का, पुण्य–दान का, उनको रहा विचार सुनो।।

निषाद राज निर्धन खेवट से, श्री राम की थी यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

उद्धार अहिल्या देवी का था, श्री राम ने किया सुनो।
सुग्रीव, विभीषण से दुखियों को, राम ने अपना लिया सुनो।
विघ्न और बाधाओं से वे, कभी नहीं घबराते थे।
मानवता के हत्यारों से, वे निर्भय अड़ जाते थे।

इसीलिए श्री राम की महिमा, गाती है दुनियां सारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम ने न्यायकारी।
उग्रवाद, आतंकवाद, दिन पर दिन बढ़ता जाता है।
दानव दल हुंकार रहा है, नजर दुखी जग आता है।।

आपा–धापी मची हुई है, धर्म कर्म सब भूल गए।
नर–नारी बन गए स्वार्थी, झूठे मद में फूल गए।।
छुआ–छात की ऊंच–नीच की पनप गई अब बीमारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे न्यायकारी।।

श्रीराम के पुत्र–पुत्रियो! जागो धनुष उठाओ तुम।
मानवता के हत्यारों का, जग से नाम मिटाओ तुम।।
तरुणाई का जोश दिखाओ, श्री राम बन जाओ तुम।
दुर्गुण त्यागो, सद्‌गुण धारो, जग को स्वर्ग बनाओ तुम।।

"नन्दलाल" थी श्री राम को, प्राणों से प्रजा प्यारी।
वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम थे– न्यायकारी।।

पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन, बहीन जनपद, पलवल (हरि.)
चलभाष क्रमांक – 09813845774

## प्रधानमंत्री मोदी जी भी तुष्टीकरण करने लगे हैं!

मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए मोदी जी हिन्दूवादी रहे किन्तु प्रधानमंत्री बनने के बाद बाजपेयी जी की भाँति अल्प संख्यक तुष्टीकरण कर रहे हैं।

गांधी जी की फोटो पर और उनकी समाधि, जयंती पर, पुष्प अथवा पुष्पमाला चढ़ाते हैं जबकि सरदार पटेल की सोच, विचार सावरकरवादी थी। आप पटेल की विशाल प्रतिमा भी बनवा रहे हैं।

जो तुष्टीकरण कांग्रेस ने लम्बे समय तक किया और राष्ट्रवादियों को पसन्द नहीं आया अब वहीं काम मोदी जी कर रहे हैं–

– 20: के आधार पर 90 जिलों को मुस्लिम बहुल बनाए रखना; अल्प संख्यक आयोग को बने रहने देना; राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम को जारी रखना; राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान आयोग को बने रहने देना; अल्पसंख्यक मामलों सम्बन्धी मंत्रालय को चालू रखना; उर्दू को बढ़ावा देना और भाजपा में अल्पसंख्यक मोर्चा को कायम रखना; मुस्लिम छात्रों को छात्रवृतियां, कम ब्याज पर कर्ज, निःशुल्क कोचिंग की व्यवस्था तथा अनुदान देना। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में स्कूल, कॉलेज, छात्रावास बनवाना; मुस्लिम–ईसाई परिवारों को नसबन्दी–छोटे परिवार के लिए कुछ नहीं कहना, 17 करोड़ मुस्लिमों को राष्ट्रभक्त घोषित करना।

इतने कार्यों पर, धन लुटाने पर भी, कश्मीर घाटी से, मुस्लिमों ने मोदी को वोट नहीं दी। भाजपा के सारे प्रत्याशी हार गए।

दिल्ली प्रदेश विधान सभा चुनावों से मुस्लिमों और हिन्दुओं ने मोदी की, भाजपा को, करारी हार दिलाई।

मोदी जी, याद रखें कि 2019 के चुनावों में बूढ़ी कांग्रेस और नौजवानों की पार्टी "आप" सत्ता में आ सकती हैं इसलिए आप हिन्दूवादी ही बने रहें।

राजेश गोयल आर्य
बुलन्दशहर (उ.प्र.)
मो.: 8958778443

**********

## मृतक संस्कार एवं आर्यसमाज

पौराणिक जन मृतकसंस्कार, शान्तियज्ञ के लिए आर्यसमाज का आश्रय लेते हैं, उनका एक मात्र प्रयोजन समय एवं धन की बचन करना होता है। विवाह आदि संस्कार के प्रति उदासीन होते हैं। विवाह प्रमाण पत्र की मान्यता होने से पौराणिक एवं अर्न्तजातीय विवाह वाले आर्यसमाज का ही आश्रय लेते हैं। आज आर्य समाज 99 प्रतिशत मृतक संस्कार का द्योतक बना हुआ। पौराणिक एवं कुछ आर्य समाजी भी आर्य पुरोहित द्वारा मृतक संस्कार, शान्ति यज्ञ के पश्चात् थोड़ी दक्षिणा देकर पौराणिक मतानुसार एकादशा, द्वादशा सेजया दान, मृतक श्राद्धभोज आदि का आयोजन करते हैं, दान की वस्तुये पौराणिक पंडितों एवं उनके मन्दिरों को देते हैं।

ईश्वर, जीव, प्रकृति, लोक, परलोक, जन्म, मृत्यु आदि उपदेश से प्रभावित करने वाले विद्वान, समाज की अन्य संस्कारों के लिए मांग क्यों नहीं अवश्य ही समझाने एवं प्रचार की कमी हैं, आवश्यक है कि पुरोहित आचार्य, पारिश्रमिक, दक्षिणा के साथ प्रचार प्रसार एवं संस्था के विकास के लिए आवश्यक दान की वस्तुऐं, राशि यजमान की स्थितिनुसार अवश्य ही लें, यजमान को अन्य संस्कार के लिए प्रेरित करें।

पुरोहित, आचार्य स्वतंत्र न होकर सम्बन्धित आर्य समाज से रजिस्ट्रेशन (निबन्धन) करा एक निश्चित राशि आर्य समाज को दिलाकर पुरोहित कार्य करे इससे आर्य समाज एवं पुरोहित की पहचान बनेगी और आर्य समाज की गतिविधि, निर्माण प्रचार को बल मिलेगा। संस्था का विचार, संदेश आम लोगों तक जायेगा। हमनें इस दिशा में कुछ कार्य किया है, संस्कारों पर पत्रक बटवाया है, नमुनेका प्रति यो है

नन्दलाल आर्य
आर्य समाज, बेतिया,

**********

☞ पृष्ठ 07 का शेष

# हमें गोली से उड़ाया

है और आपको अधिकार भी प्राप्त है। परन्तु इस प्रकार आप 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाला सिद्धांत ही अपना रहे हैं और आप उस पर कटिबद्ध हैं। हमारे अभियोग की सुनवाई इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि हमने कभी कोई प्रार्थना नहीं की और अब भी हम आपसे किसी प्रकार की दया की प्रार्थना नहीं करते। हम आपसे केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही एक न्यायालय के निर्णय के अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियोग है। इस स्थिति में हम युद्धबंदी हैं, अतः इस आधार पर हम आपसे मांग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबंदियों जैसा ही व्यवहार किया जाए और हमें फांसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।

अब यह सिद्ध करना आपका काम है कि आपको उस निर्णय में विश्वास है जो आपकी सरकार के एक न्यायालय ने किया है। आप अपने कार्य द्वारा इस बात का प्रमाण दीजिए। हम विनयपूर्वक आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सेना-विभाग को आदेश दे दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए सैनिक टोली भेज दी जाए।

भवदीयः भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव

("शहीद भगतसिंह, दस्तावेजों के आइने में" पुस्तक से साभार)

# आर्य समाज गायत्री विहार द्वारा देवयज्ञ आयोजित

आर्य समाज गायत्री विहार की ओर से बजरंग नगर स्थित ब्राईटलैंड सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल में यज्ञ कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य विद्वान अरविन्द पाण्डेय व उमेश कुर्मी के सानिध्य में देवयज्ञ किया गया जिसमें मुख्य यजमान मन्नूभाई आडे व श्रीमती लीला आडे एवं मुख्य अतिथि बृजेश शर्मा नीटू, आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी गंगाधर मीणा, पूर्व जिला खेल अधिकारी विनय मेहता, समाजसेवी जी.डी. पटेल व अन्य उपस्थित महिला, पुरुषों ने विश्व शांति की कामना करते हुए आहुतियां डालीं।

इस अवसर पर नवनिर्वाचित पार्षद बृजेश शर्मा नीटू, आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय तथा मंत्री उमेश कुर्मी ने चार बार अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्य दम्पति का शाल औढ़ाकर सम्मान किया। उपस्थित सभी ने सस्वर गायत्री पाठ का उच्चारण किया तथा शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

# "पातंजल महाभाष्य में विन्ध्य" विषय पर प्राच्य संगोष्ठी

वेदवाणी-वितानप्राज्यविद्याशोध संस्थान, बैंक कॉलोनी रोड, कोलगवाँ, सतना (मध्य-प्रदेश) द्वारा आयोजित 'प्राच्य विद्या संगोष्ठी का द्विदिवसीय सत्र सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी का विषय "पतंजलि के ग्रन्थों में प्रतिबिम्बित विन्ध्य की दशा और दिशा" था।

संगोष्ठी की अध्यक्षता हिन्दी के पूर्व प्रोफेसर डॉ. सुमेर सिंह बघेल 'शैलेश' जी ने की। मुख्य अतिथि, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रोफेसर पद पर कार्यरत आचार्य सदाशिव द्विवेदी जी थे। मुख्य अतिथि ने कहा कि यह मध्य प्रदेश की भूमि साहित्यक व सांसस्कृतिक दोनों विरासतों की धनी है। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. किरण आर्या जी (असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत, विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर) तथा एशिया के एकमात्र विकलांग विश्वविद्यालय से डॉ. महेन्द्र उपाध्याय जी उपस्थित थे।

विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए हुए प्रतिभागियों द्वारा शोधपत्रों का वाचन किया गया। डॉ. किरण आर्या जी ने अपने शोधपत्र में चरकसंहिता का रचयिता पतञ्जलि को मानते हुए वैयाकरण पतञ्जलि से उनका अभेद बताते हुए आयुर्वेद में वर्णित विन्ध्य का विवेचन प्रस्तुत किया। डॉ. महेन्द्र उपाध्याय ने बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय की शोध-छात्राओं प्रतिभा, प्रियंका व संजीवनी व दिल्ली विश्वविद्यालय की शोध-छात्राओं कल्पना आर्या व प्रीति ने शोधपत्रों का वाचन किया। प्रोफेसर सदाशिव द्विवेदी जी तथा संगोष्ठी के संयोजक आचार्य सुद्युम्न जी का उद्बोधन हुआ। अन्त में प्रमाण वितरण के उपरान्त शान्तिपाठ से सभा का समापन हुआ।

# खलासी लाईन सहारनपुर में विशेष कार्यक्रम

आर्य समाज खलासी लाईन के प्रांगण में बोधोत्सव पर विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान नरेन्द्र गर्ग सपत्नी रहे। यज्ञ आर्य समाज की वेद विदुषी श्रीमति मीना वर्मा जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरांत वैदिक विद्वान आचार्य धीरज कुमार आर्य शिमलाना ने अपने प्रवचन में कहा हमें वेद का सिर्फ उच्चारण ही नहीं उसकी शिलाओं पर आचरण करना भी चाहिए। भजनोपदेशक श्री मदनलाल आर्य जाजवा सहारनपुर जी ने एवं वैदिक विदुषी भजनोपदेशिका बहन वैशाली जी ने भजनों के माध्यम आर्यजनों को प्रेरित किया। आचार्य जी ने यज्ञ पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि यज्ञ की विकृति के कारण ही हमारा विकास रुका। तत्पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

# उड़ीसा में सुन्दरगढ़ जिले के गेलेईबाहाल ग्राम के 120 परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली

पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, संचालक गुरुकुल आश्रम आम सेना एवं "प्रधान" उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एवं सहयोग से गेलेईबाहाल ग्राम में वैदिक धर्म की दीक्षा के भव्य कार्यक्रम में 120 परिवारों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य पूज्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती जी के करकमलों से ओ३म् ध्वजा उत्तोलन के साथ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ एवं दीक्षा के कार्यक्रम का संचालन श्रद्धेय वा. पं. विशिकेशन जी शास्त्री ने किया। इस यज्ञ में 120 ईसाई परिवारों ने आहुति देकर वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की। इस आयोजन में सभा के प्रचारक श्री परमानन्द जी आर्य एवं प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री वासुदेव होता एवं श्रीकान्त जी का भी सराहनीय सहयोग रहा। इस अवसर पर स्वामी व्रतानन्द जी ने 120 नये कम्बल तथा 120 साड़ी निर्धन परिवार के स्त्री-पुरुषों को वितरण की। अन्त में हजारों लोगों के द्वारा प्रीतिभोज में प्रसाद ग्रहण करने साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 01-02/4/2015
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

# डी.ए.वी. जसोला विहार रजत जयंती वर्ष में

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जसोला विहार, नई दिल्ली ने रजत जयंती वर्ष में पदार्पण किया। इसका शुभारंभ विद्यालय के प्रांगण में वैदिक यज्ञ के द्वारा किया गया। इस यज्ञ का आयोजन विद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा किया गया तथा विद्यालय की प्रबंधन समिति के चैयरमैन डॉ. अरोड़ा, मैनेजर डॉ. चित्रा नाकरा, प्रधानाचार्य डॉ. वी.के. बड़थ्वाल तथा प्रबंधन समिति के अन्य गणमान्य सदस्यों ने अपने करकमलों से इस यज्ञ में आहुती दी। मैनेजर डॉ. चित्रा नाकरा ने गत 24 वर्षों में विद्यालय के निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहने के लिए हार्दिक बधाई देते हुए भविष्य में भी उन्नति के शिखर छूने के लिए शुभकामनाएँ दीं। प्रधानाचार्य डा. बड़थ्वाल ने कहा कि विद्यालय की उन्नति में इसी प्रकार परिश्रम करते रहें तो वह दिन दूर नहीं जब डी.ए.वी., जसोला विहार का नाम देश के श्रेष्ठ विद्यालयों में लिया

जाएगा। इस उपलक्ष्य में विद्यालय के प्रांगण मे 'ओ३म्' ध्वजारोहण भी किया गया।

# डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालन्धर का वार्षिक खेलकूद कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर का वार्षिक खेलकूद कार्यक्रम भव्य समारोह पूर्वक सम्पन्न हो गया। वर्ष 2014-15 में विश्वविद्यालय के खेलकूद विभाग द्वारा फुटबाल, वालीबाल, बास्केटबाल, कबड्डी, बैडमिन्टन, टेबल टैनिस, शतरंज, खो-खो, क्रिकेट, रस्सा कस्सी के अतिरिक्त ट्रैक और फीलड इवेण्टस् में छात्र और छात्राओं के लिए मुकाबले कराये गए। ओवर-आल चैम्पियन बनने की होड़ में विभिन्न विभागों में कड़ा मुकाबला देखने को मिला।

साहिल भण्डारी तथा कु. भावना को क्रमशः सर्वोत्तम छात्र तथा छात्रा खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया। अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय खेलों में डी.ए.वी. विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष स्थान पाने वाले खिलाड़ियों-अजयमान और दानिश को भी सम्मानित किया गया।

समापन समारोह पर पदम् श्री और अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित भारतीय हाकी टीम के भूतपूर्व कप्तान, ओलम्पियन सरदार परगट सिंह मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने भारतीय खेल जगत् में डी.ए.वी. के महत्पूर्ण योगदान की प्रशंसा करते हुए डी.ए.वी. विश्वविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य को कामना की।

इस अवसर पर डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव श्री अरविन्द घई विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विश्वविद्यालय के रजिस्टार डा. सतीश कपूर, ओ.एस.डी.-डॉ. के एन. कौल के अतिरिक्त डी.ए.वी. कालेज के जालन्धर के प्राचार्य डा. बी.बी. शर्मा भी उपस्थित थे।

# नैतिक मूल्यों पर अभिभावक सभा का आयोजन किया गया

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बुद्धपुर विद्यालय के प्रांगण में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर आधारित एक अभिभावक सभा आयोजित की गई। कार्यक्रम के मुख्यातिथि थे- रामकिशन मिशन से आए देवाशीष मुखर्जी एवं भास्कर जी। इस सभा का उद्देश्य था कि अभिभावकों से विद्यालय में दी जा रही मूल्य परक शिक्षा पर विचार विमर्श किया जाय। इस सभा

में प्रोजेक्टर के माध्यम से अभिभावकों को यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया कि वे किस प्रकार अपने बच्चों का मार्ग दर्शन कर उन्हें अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ने में सहायता कर सकते हैं। अंत में प्रधानाचार्या श्रीमती देविका दत्त ने सबका धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम की प्रशंसा की। अभिभावक भी इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए और विद्यालय के इस प्रयास की सराहना की।

# डी.ए.वी. जीन्द के विद्यार्थी विभिन्न स्तरों पर सम्मानित

आर्य विद्या सभा नई दिल्ली द्वारा हर वर्ष विद्यालयों में धर्म शिक्षा व संस्कृत की परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। जिसमें डी.ए.वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल जीन्द की छात्रा तनिषा ने संस्कृत की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी के तहत नवंबर 2014 में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित परीक्षा में भी इस बालिका ने तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय के गौरव को बढ़ाया। छात्रा तनिषा को राज्य सरकार के द्वारा 5000/- रूपए की नकद छात्रवृति से सम्मानित किया गया। 'बेटी-बचाओ, बेटी-पढ़ाओ अभियान के तहत पानीपत में हुए कार्यक्रम में डी.ए.वी. की दो छात्राएं माननीय मुख्यमन्त्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी के करकमलों से सम्मानित हुईं जिसमें यशस्विनी मलिक को निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर द्वितीय स्थान अर्जित करने पर 7500 रूपए की राशि से पुरस्कृत किया गया व छात्रा कृतिका यादव को पेंटिग प्रतियोगिता में तृतीय स्थान अर्जित करने पर 5000/- रूपए की राशि से सम्मानित किया गया। इन उपलब्धियों पर विद्यालय के प्राचार्य श्री हरेश पाल पांचाल जी ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि हर बच्चे में प्रतिभा छिपी होती हैं जिन्हें प्रतियोगिताओं के माध्यम से निखारा जा सकता है। अतः बच्चों को उन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। प्राचार्य जी ने सम्मानित हुए विद्यार्थियों, अध्यापकों व उनके अभिभावकों को ढ़ेरों बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की शुभकामनाएं दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक - **पूनम सूरी**